राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक – पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर]

★

– ग्रन्थाङ्क १७ –

अज्ञातकर्तृकः

नृत्तसङ्ग्रहः

★

— प्रकाशक —

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

(Rajasthan Oriental Research Institute)

जयपुर (राजस्थान)

वि० सं० २०१३]   प्रति ७५०   [मूल्य रू०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक – पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर]

★

– ग्रन्थाङ्क १७ –

अज्ञातकर्तृकः

वृत्तसङ्ग्रहः

★

— प्रकाशक —

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

(Rajasthan Oriental Research Institute)

जयपुर (राजस्थान)

वि० सं० २०१३] प्रति ७५० [मूल्य रू०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

RĀJASTHĀNA PURĀTANA GRANTHAMĀLĀ

Published by the Government of Rajasthan

A Series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṁśa, Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to India in general and Rajasthan in particular.

★

General Editor

Acharya JINA VIJAYA MUNI, Puratattvacharya

Honorary Member of the German Oriental Society, Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona and Gujarat Sahitya Sabha, Ahmedabad. Honarary Director, Rajasthan Oriental Research Institute.

No. 17

NṚTTA SAMGRAHA

(A small treatise on the art of dancing)

★

edited by

Prof. Dr. PRIYABALA SHAH

M. A. Ph. D. (Bombay) D. Litt (Paris)

(Head of the Department of Ancient Indian Culture : Ramanand Arts College, Ahmedabad.)

Rajasthan Oriental Research Institute

Jaipur

1956

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अज्ञातकर्तृकः

नृत्तसङ्ग्रहः

★

सम्पादिका

डॉ. प्रियबाला शाह. एम्. ए. पीएच्. डी. (बंबई)

डि. लिट् (पेरिस)

(प्राध्यापक, रामानन्द आर्टस् कॉलेज, अहमदाबाद)

★

—: प्रकाशनकर्ता :—

राजस्थान-राज्याज्ञानुसार

संचालक-राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

(Rajasthan Oriental Research Institute)

जयपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१३] प्रथमावृत्ति ★ मूल्य रू० खिस्ताब्द १९५६

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रकाशक –
संचालक – राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर, के आदेशानुसार – गोपालनारायण बोहरा ।
मुद्रक –
जयन्ति दलाल, वसंत प्रिण्टींग प्रेस, घीकांटा रोड, अहमदाबाद ।
और
मुकुन्द के. शास्त्री, इला प्रिण्टरी (वल्लभ मुद्रणालय) पानकोर नाका, अहमदाबाद ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jin Gun Aaradhak Trust

प्रधान संपादकीय वक्तव्य

★

राजस्थान और गुजरात, मालवा आदि प्रदेशोंमें प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थोंके बिखरे हुए एवं जीर्णशीर्ण दशामें जो संग्रह प्राप्त होते हैं उनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं प्राचीन राजस्थानी-गुजराती भाषामें रचित छोटी बडी ऐसी सेंकडो ही साहित्यिक कृतियां उपलब्ध होती हैं जो अभीतक प्रायः अज्ञात और अप्रसिद्ध हैं। विद्वानोंका लक्ष्य प्रायः अभीतक उन्हीं सुप्रसिद्ध और सुज्ञात ग्रन्थोंके अन्वेषण एवं संशोधनकी तरफ रहा है जो यत्रतत्र यथेष्ट प्रमाणमें उपलब्ध होते हैं। ग्रन्थोंके संपादन और प्रकाशन के विषयमें भी प्रायः यही प्रथा चली आ रही है। सुप्रसिद्ध और सुज्ञात ग्रन्थोंके सिवा छोटी छोटी एवं प्रकीर्ण रचनाओंके विषयमें विद्वानोंका विशेष लक्ष्य नहीं जाता है और इसलिये अभीतक ऐसी रचनाओंके संपादन-प्रकाशनका मुख्य प्रयत्न प्रायः नहींसा हुआ है। हमारे प्राचीन इतिहास एवं सांस्कृतिक सामग्रीकी दृष्टिसे इन फुटकर रचनाओंमें जो ज्ञातव्य छिपे पडे हैं उनकी तरफ हमारा लक्ष्य बिल्कुल नहीं गया है-ऐसा कहा जाय तो कोई अत्युक्तिकी बात नहीं होगी।

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरका कार्य प्रारंभ करते समय, हमारा मुख्य लक्ष्य इस प्रकारके प्रकीर्ण साहित्यका अन्वेषण, संग्रह, संरक्षण, संशोधन एवं प्रकाशन आदि करनेका रहा है और तदनुसार, राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला द्वारा ऐसी अनेकानेक साहित्यिक रचनाओंको, सुयोग्य विद्वानों द्वारा शोधित-संपादित कराकर प्रकाशमें रखनेका आयोजन हमने किया है।

इसी उद्देश्यके आधारानुसार, नृत्तसंग्रह नामक प्रस्तुत लघुकृति राज-स्थान पुरातन ग्रन्थमालाके १७ वें मणिके रूपमें प्रकाशित की जा रही है। इस कृतिकी १३ पत्रात्मक एक जीर्ण शीर्ण और अपूर्ण प्रति गुजरात विद्यासभाके संग्रहमें सुरक्षित है जो अहमदाबादके 'गुजरी' नामसे पहचाने जानेवाले -सप्ताहमें एक दफह बजारके फुटपाथ पर लगनेवाले-हटवाडेमें, रद्दी कागज बेचनेवाले कबाडीके पाससे उपलब्ध हुई है। जैसा कि संपादिका विदुषीने अपनी संक्षिप्त प्रस्तावनामें सूचित किया है-इस रचनामें नृत्य-नाट्य विषयक कुछ मुख्य बातोंका वर्णन किया गया है अतः इसका नाम 'नृत्तसंग्रह' रखना समुचित समझा गया है।

इस छोटेसे ग्रन्थमें विशेष लोकप्रिय कतिपय नृत्योंके स्वरूप और प्रकारका वर्णन किया गया है जिनमें भारतके दक्षिण और उत्तर दोनों प्रदेशोंके नृत्यप्रकारोंका समावेश है। दक्षिणके मुख्य द्राविड, तैलंग और कर्णाट देश प्रचलित लोक-

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नृत्तोंका, जिनमें मुख्य करके उन उन देशोंकी भाषाके गीतोंके साथ अभिनय किया जाता है, वर्णन किया गया है और उत्तर प्रदेशमें प्रचलित उन नृत्तोंका उल्लेख है जिनमें संस्कृत, मध्यदेशीय (आधुनिक हिन्दी) और पारसीक अर्थात् फारसी भाषाके गीतोंका व्यवहार होता है। यवनलोकोमें बहुप्रिय जक्कडी नामक नृत्तका भी स्वरूप बताया गया है। ग्रन्थान्तमें पश्चिम एवं उत्तर भारतमें सुप्रसिद्ध दण्डरास (जिसको गुजरातीमें दाण्डिया रास कहते हैं) का उल्लेख किया गया है।

इस प्रकार इस छोटेसे निबन्धमें नृत्यकलाके विशेष लोकप्रिय और लोकप्रसिद्ध प्रकारोंका सुगम और सरल संस्कृतमें जो वर्णन दिया गया है वह इस कलाके अभ्यासियोंको अवश्य मनोरंजक और ज्ञानप्रद सिद्ध होगा।

गुजरात विद्यासभाके प्राचीन ग्रन्थ संग्रहमें अज्ञात एवं उपेक्षित रूपमें पडी हुई प्रस्तुत कृतिके अवलोकनद्वारा इसके महत्त्वको अवगत करके विदुषी डॉ. प्रियबाला शाहने इसका इस प्रकार संशोधन-संपादन कर प्रकाशमें लानेका जो प्रयत्न किया है वह अभिनन्दनीय है।

मुनि जिनविजय
सम्मान्य संचालक
राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर
जयपुर

अनेकान्त विहार
अहमदाबाद.
आषाढशुक्ल ८. वि. सं. २०१३
(१५-७-५६)

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

PREFACE OF THE GENERAL EDITOR

★

There are still hundreds of old manuscripts big and small in Sanskrit, Prakrit, Apabhraṁśa and old Rājasthāni-Gujarāti lying scattered over Rājasthāna, Gujarāta, Mālawā and other regions of our country. Many of these are still unknown and unpublished. Up till now scholars have generally devoted themselves to works which are comparatively bulky, well known and available in great number. The same outlook prevails also amongst publishers of oriental series.

But in addition to those big and well-known works, there are many small ones on a variety of subjects which have not attracted the attention that they deserve. In fact, no major attempt has been made to edit and publish these small works on important subjects. It would be no exaggeration to say that these works which contain important material for the history and culture of our country and which embody not a negligible part of our ancient learning have been mostly neglected, probably because they are in small manuscripts and rare to find.

It has been our endeavour from the very inception of Rājasthāna Oriental Research Institute to search for, collect and preserve mss. of such small works on various subjects and also to edit and publish them. Accordingly we have arranged for critical editions of such works at the hands of competent scholars and their publication in the Rājasthāna Purātana Granthamālā.

In persuance of this object, this small but important work Nṛtta-Saṁgraha is being published in the Rājasthāna-Purātana-Granthamālā as number 17. The ms. of this work which consists of thirteen folios is preserved in the mss. collection of Gujarāta Vidyā Sabhā, Ahmedabad. It would be interesting to know that this and many similar important works were rescued by the Gujarāta Vidyā Sabhā from the vendors of old things in the weekly market of Ahmedabad, called Gujarī.

The title of this work is missing. But as the learned editor has shown, this work treats of dancing and therefore it is appropriately named Nṛtta-Saṁgraha.

In this small work different varieties of old Indian dancing are described. It includes both the Northern and Southern types. In the Southern types are mentioned dances prevalent in Drāviḍa, Telanga and

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

Karṇāṭaka with the Abhinayas accompanying the songs in their languages. In the Northern, are included those dances which accompany songs in Sanskrit, Madhyadeśiya (modern Hindi) and Pārsīka or Persian. The Jakkaḍi dance – so popular amongst the Yavanas – is also described. At the end of the work is mentioned the well-known Daṇḍa-Rāsa (known in Gujarātī as Dānḍiyā Rāsa).

Thus this small work in a concise form gives information about the art of dancing which, it is hoped, will be interesting and useful to students of that art and Indian culture.

Dr. Priyabālā Shah deserves our thanks for discovering this unknown and neglected work from the mss. collection of Gujarāta Vidyā Sabhā and realizing its importance from its perusal for undertaking to edit it for this series.

Muni Jinavijaya
Hon. Director,
Rajasthan Oriental Research Institute,
JAIPUR.

Anekanta Vihar
Ahmedabad.
15-7-56

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

एतः सांप्रदायकाः वाद्यानां नादसामग्रंचकृत्वा वदितमानसाः॥ मेलापकं वादयेयुः प्रबंधं गजरंतनः॥ढु
ढुकस्यांततश्चांतर्द्धौ दूरीतेसति। नर्त्तको नर्त्तकी वापि दिक्पालं श्चविधिविन्नुं। मातृकामुनिनागं श्चयक्ष
गंधर्वकिंनरान्। गणेनंतरतंतद्दुं लक्ष्मी वाणीं नुमामुषा। ज्येष्ठश्चये गुणैर्विंभुं बभातद्रंगमाविश्शेतांन्नृत्त
मंडपमध्यान् मंगलाकृतिमानतः सप्तसप्तकराक्रांतस्था नंतद्रंगमुच्यते। इति रंगप्रवेशः। तत्रकार्यो विधि
नृत्तंबंधनं नामिर्विधकं। गत्यादिनियमैर्युक्तं बंधकं नृत्तमुच्यते। अनिबंधत्वनियमादयो द्वेत्रा क्रमोदा
धा। मुखचालश्चोरुपाणिधुवाडा विंडु लागवः ततः परं शब्द चालिर्नानानृत्तप्रबंधकाः। स्वरमंड्रा द्वय
गीतप्रबंधप्रश्चिंडुजातयः धरूणं ज्ञातयः पश्चा कृतिध्रुवपदानि च। इत्युदिष्टं बंधकस्य लक्षणं च प्रोच्य
च्यते। मुखंतु पूर्वरंगस्यात्चालिस्तदनु गागतिः। मुखचालिरिति प्रोक्ता नृत्तज्ञैः पूर्वसूरिभिः। चंशत्रिंने
त्र वा राष्टवदांगशरदिक्तुवा। स्वसगृक्रमतोन्न्यमध्ये पुष्पांजलिं क्षिपेत्। अयतः क्षेपणं ज्ञाजापीश्चते
दक्षिणे सत्ता। दृष्ट्वा गुरुः स्वयं वामे रंगपी- गंतरे क्षिपेत्। रंगपीठस्य मध्ये तु ब्रह्मा स्वयमधिष्ठितः इत्य

हि। इति रासनृत्यं॥ नृत्यानिबंधनन्त्री

Introduction

The text edited in the present work is based upon a single Ms. in the possession of Gujarat Vidysabha, Ahmedabad.
Ms. No. 868

Name—not given at the end. I have named it *Nṛtta-saṁgraha* as it describes various kinds of Nṛttas.

Author—?

Material—Paper

Script—Devanāgarī

Extent of the Ms.—2 to 13, i. e. 12 folios (incomplete)

Size of leaves—9·25×4·25 inches

Area of writing—7·5×3·75 inches

Number of lines—10 lines per page

Number of letters—36 to 40 in each line

Writing—fairly uniform and legible

Age—not mentioned. From its appearance, nearly two to three hundred years old.

Begins-Folio No. 1 is missing. The second folio begins–

* * * * छन्तः सांप्रदायकाः ।
वाद्यानां नादसाम्यं च कृत्वाव'हतमानसाः ॥

Ends

दण्डैर्विना कृतं नृत्यं रासनृत्यं तदेव हि ।
इति रासनृत्यम् । इत्यनिबन्धनृत्तम् ॥

On comparing this work with the Saṁgīta-ratnākara (Vol. 2, Page 800, ślo. 1271-72 Ānandāśrama edition), I found that the verses referred to above are a part of the section on संप्रदाय. The verses that precede are nearly 9 in number. If our Ms. began on the second side of the first folio, it would provide space for this number. I have quoted these verses in the foonote, page 1.

The name and the author of this work are not known. I was tempted to edit it, because it has some noteworthy information to give regarding dancing as it was practised in India in ancient and medieval times. A part of its subject matter agrees with the usual information given in Nṛtya works like संगीतरत्नाकर. However, while explaining technical terms like

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चिन्दु कद्विधह, जक्कडो etc., it traces them to the regions of their origin. This in itself is very interesting. In addition to this, its refefrences to यवन and पारसीक types of dance give this work special importance.

As far as the language is concerned, the author does not, himself, seem to have written pure Sanskrit. So I have not tried to emend the text from the point of view of Pāṇinian grammar. In the case of non-Sanskrit words like चिन्दु, जक्कडो and such others, I have left them as they are without attempting any uniformity in them.

Before concluding, I must not omit to tender my most sincere thanks to revered Āchārya Śrī Muni Jinavijayaji, the Honorary Director of Rajasthan Puratattva Mandir, Jaipur, who is known for the encouragement he gives to young workers in the field of researh. I am greatly indebted to him for not only accepting this work for publication in Rajasthan Puratattva Series, but also for helping me in learning the craft of editing old manuscripts.

I am much indebted to my teacher Prof. R. C. Parikh, for giving much of his valuable time for discussing with me several problems connected with the preparation of the present text. As Director of the institution in which I am working, he was kind enough to get permission to undertake this work from the authorities concerned.

Ahmedabad

1-9-1952.

Priyabala Shah

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[नृत्तसंग्रहः]

. . . . ।
. . . . *ष्ठन्तः [1]सांप्रदायिकाः ॥ १

* यत्रैको मुखरी [2]श्रेष्ठस्तथा प्रतिमुखर्यंपि[3] ।
द्वावडावर्जिनौ स्कन्धावर्जिनौ करटाधरौ (?) ॥ १२६३

द्वात्रिंशन्मर्दलधरा वरास्तालधरद्वयम्[4] ।
कांस्यतालधरास्त्वष्टाविष्टाः काहलिकद्वयम् ॥ १२६४

वांशिकौ रसिकौ व्यक्तसुरक्तप्रचुरध्वनी ।
चत्वारो मधुरध्वाना [5]भवन्त्येते करास्तयोः ॥ १२६५

द्वौ मुख्यगायनौ सार्धमष्टभिः सह गायनैः ।
मुख्यगायनिके चाष्टौ सहगायनिकास्तयोः ॥ १२६६

संप्रदायसमुल्लासि पात्रमेकं [6]गुणान्वितम् ।
सर्वेऽमी रूपवन्तः स्युश्चित्रालंकरणान्विताः ॥ १२६७

गीतादिसाम्यनिपुणाः [7]प्रहर्षोत्फुल्लचेतसः ।
उत्तमः संप्रदायोऽसौ लोके कुटिलमुच्यते ।
तदर्धं मध्यमो न्यूनोऽस्मात्कनिष्ठो निगद्यते ॥ १२६८

इति संप्रदायलक्षणम् ॥

अनुवृत्तिर्मुखरिण[8]स्तलयोर्न्यूनपूरणम्
तालानुवृत्तिरित्येते चत्वारः कुटिले गुणाः ॥ १२६९

संप्रदायस्य दोषः स्यादेतद्गुणविपर्ययः ॥ १२७०

इति संप्रदायगुणदोषाः ॥

संगीतज्ञैर्बुधैः सार्धं नायके प्रेक्षके स्थिते ।
प्रविश्य रङ्गभूमिं ते तिष्ठन्तः सांप्रदायिकाः ॥ १२७१

'संगीतरत्नाकर' अ. ७ (आ. सं. सिरीझ)

1 Ms °दायकाः 2 ग. श्रेष्ठः सूच्या प्र° । 3 च. °पि । द्वौ वामजठरावद्धावर्जितौ करटाधरौ (?) । 4 ख. ग. °धराद्वयम्° । 5 च. °वन्त्यो नरकास्त° । 6 ख. °णाश्रयम् । 7 ग. प्रकर्षो°. 8 °णरत्ताल°.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वाद्यानां नादसाम्यं च कृत्वाऽवहित[1]मानसाः ।
मेलापकं वादयेयुः प्रबन्धं गजरं ततः ॥ २
कुडुकस्यां ततश्चान्तध्वनौ दूरीकृते सति ।
नर्तको नर्तकी वापि दिक्पालांश्च विधिं विभुम् ॥ ३
मातृकामुनिनागांश्च यक्षगन्धर्वकिन्नरान्[2] ।
गणेशं भरतं तण्डुं लक्ष्मीं वाणीमुमामुषाम् ।
ज्येष्ठाश्च ये गुणैर्विष्णुं नत्वा तद्रङ्गमाविशेत् ॥ ४
नृत्तमण्डपमध्यात् तु मङ्गलाकृति मानतः ।
सप्तसप्तकराक्रान्तस्थानं तद् रङ्गमुच्यते ॥ ५

इति रङ्गप्रवेशः ॥

तत्र कार्यं द्विधा नृत्तं बन्धकं चानिबन्धकम् ।
गत्यादिनियमैर्युक्तं बन्धकं नृत्तमुच्यते ॥ १
[3]अनिबन्धं त्वनियमादथोद्देशक्रमो यथा ।
मुखचालिश्चोरुपाणि धुवाडा विड्डुलागवः ॥ २
ततः परं शब्दचालिर्नानाशब्दप्रबन्धकाः ।
स्वरमन्द्रादयो गीतप्रबन्धाश्चिन्दुजातयः ॥ ३
धरूणां ज्ञातयः पश्चात् कति ध्रुवपदानि च ।
इत्युद्दिष्टं बन्धकस्य लक्षणं [4]त्वधुनोच्यते ॥ ४
मुखं तु पूर्वरङ्गः स्याच्चालिस्तदनुगा गतिः ।
मुखचालिरिति प्रोक्ता नृत्तज्ञैः पूर्वसूरिभिः ॥ ५
चन्द्रत्रिनेत्रवाराष्टवेदाङ्गशरदिक्षु च ।
स्वसव्यक्रमतो नृत्वा मध्ये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥ ६
अग्रतः क्षेपणाद् राजा पीड्यते दक्षिणे सभा ।
पृष्ठे गुरुः स्वयं वामे रङ्गपीठान्तरे क्षिपेत् ॥ ७
रङ्गपीठस्य मध्ये तु ब्रह्मा स्वयमधिष्ठितः ।
इष्टार्थं क्रियते पुष्पमोक्षणं रङ्गमध्यतः ॥ ८
यतः पादस्ततो हस्तो यतो हस्तस्ततस्त्रिकम् ।
पादस्य निर्गमं ज्ञात्वा शेषाङ्गानि नियोजयेत् ॥ ९
इतस्ततोऽर्थपर्याय इङ्गने अङ्गने इति ।
रञ्जकाय वदेत् तत्र यथाताललयोचितम्[5] ॥ १०

1 Ms °वस्थित° 2 Ms °रात्. 3 Ms °न्ध. 4 Ms °न्व°. 5 Ms °योजि°.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आविद्धवक्त्रहस्ताभ्यां चार्या च समपादया ।
पुरतस्त्रिपदीं गच्छेन्नटवर्यो विलासतः ॥ ११

ततश्चन्द्रे लीनकं च कृत्वा समनखं ततः ।
सविलासं मन्दमन्दं तिर्यक् चालनसुन्दरम् ॥ १२

पार्श्वद्वन्द्वं सुल्लूनामा चालयेत् तु मुहुर्मुहुः ।
मन्दानिलचलद्दीपशिखेवाङ्गस्य चालनम् ॥ १३

अथवाऽहिफणाकारां सुल्लूमाहुर्मनीषिणः ।
व्यावर्त्तितौ लताहस्तौ युगपत् क्रमतो यदि ॥ १४

भवेद् द्विशिखरत्वं च पादौ संयुक्तकुञ्चितौ ।
गात्रं तदनुसारेण नीचं नीचं व्रजेत् तदा ॥ १५

तलसञ्चमनुप्राप्य सूल्लूवर्तनमाचरेत् ।
भूमेरूर्ध्वस्थितिः [1]कट्यास्तालद्वित्रिचतुष्टयात् ।
तलमध्योर्ध्वसञ्चाख्याः क्रमेण कथिता बुधैः ॥ १६

अङ्गुष्ठमध्यमाङ्गुल्यौ ये हस्तस्य प्रसारिते ।
तदग्रयोरन्तरालं तालमाहुर्मनीषिणः ॥ १७

रागालापानुगां व्यक्तशब्दालापानुसारिणीम् ।
गतिं च सर्वदा कुर्यात् सभाजनमनोहराम् ।
चार्या साग्र्या सव्यसूची पादोऽग्रतलसञ्चरः ॥ १८

अधस्तलपताकश्च बाहुस्तत्र प्रसारितः ।
शिरोदृक्करपादानां युगपद् रेचनं [2]वदेत् ॥ १९

ततस्तु मध्यसञ्चेन सोत्संग्रा करिहस्ततः ।
दक्षिणश्चरणस्तस्मान्निष्क्रम्य स्वस्तिकं भजेत् ॥ २०

सूल्लूचालनकं तत्र तथा नूपुरविद्धिकाम् ।
ततस्तु तलसञ्चेन चतुरस्रं समाश्रयेत् ॥ २१

चतुरस्रौ करौ तत्र सूल्लूं तत्रापि चालयेत् ।
ततस्तलमुखाभ्यां च चार्या स्वस्तिकया तथा ॥ २२

---

1 Ms कथा°. 2 Ms वयेत्.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तृतीयां दिशमासाद्य [1]तूर्ध्वं सव्येन सव्यतः ।
[2]समां कृत्वा समनखं पूर्ववच्चाङ्गचालनम् ।
वैशाखरेचितं तत्र बाहू तिर्यक्प्रसारितौ ॥ २३
ततः कुलीरिका चार्या द्वितीयं स्थानमाचरेत् ।
मण्डलं स्थानकं तत्र स्खलूवर्तनकं तथा ॥ २४
करिहस्तकया चार्या सव्यहस्तिकरेण च ।
उद्वेष्टितेन वामेन रङ्गमध्यं समाश्रयेत् ॥ २५
सभासंमुखतो हस्तौ तौ च तत्क्रियया पुटौ ।
पार्श्वरेचितकं तत्र जानुकुञ्चितकं तथा ॥ २६
मण्डलस्थानकं कृत्वा लताहस्तौ सुलं तथा ।
वामो यथास्थितः कार्यो दक्षिणस्तु लताकरः
ऊर्ध्वोर्ध्वाङ्गं यथा तत्र तदूर्ध्वं[3] सारयेत् करः ॥ २७
ततस्तलमुखाभ्यां च चार्या स्वस्तिकया तथा ।
सप्तमीं दिशमासाद्य सभां कुर्यात् तु वामतः ॥ २८
द्वितीयायां तृतीयायां रङ्गमध्ये च यत्क्रमम् ।
तत्क्रमं नृत्ततत्त्वज्ञश्चार्याद्यङ्गविशेषतः ॥ २९
यथाक्रमेण सप्तम्यामष्टम्यां रङ्गमध्यतः ।
नृत्त्वा चाविद्धवक्त्राभ्यां चार्या चैव मरालया । ३०
चतुर्थीं दिशमासाद्य तत्र स्थानं च मण्डलम् ।
जनितं करणं तत्र सुलं चापि प्रचालयेत् ॥ ३१
दक्षिणः खटकः कर्णे वामो मुष्टिः स्वपार्श्वतः ।
धनुःकर्षं स्थितावर्तचार्यौ तिर्यङ्मुखाख्यया ॥ ३२
षष्ठीं दिशं समागत्य प्रत्यालीढाङ्गचालनम् ।
तत्रैव चतुरस्रं च विप्रकीर्णौ[4] सुलं तथा ॥ ३३
ततोऽर्धरेचिताभ्यां च चार्या तिर्यङ्मुखाख्यया ।
पञ्चमीं दिशमासाद्य सुलं समनखं नयेत् ॥ ३४
शुद्धचालि च तत्रैव [5]कौक्कुटीमिति पाटतः ।
ततोऽञ्जलिकरं कृत्वा शिरोवदनहृत्क्रमात् ॥ ३५

1 Ms नूदूर्ध्वं. 2 Ms सभां. 3 Ms नूदूर्ध्वौ. 4 Ms °कीर्णौ. 5 Ms कुक्कुट°.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

देवं गुरुम् ऋषिं[1] नत्वा चार्यां कातरया तथा।
रङ्गमध्यमनुप्राप्य चार्याऽध्यर्द्धिकया समे ॥ ३६
तलपुष्पपुटं कृत्वा पुष्पाण्यापूर्य तत्र च।
सव्यापसव्यतः पश्चादग्रादूर्ध्वात् क्रमादिति। ३७
पुष्पाञ्जलिं दर्शयित्वा रङ्गपीठान्तरे क्षिपेत्।
तत्रैवाभिनयेन्नान्दीश्लोकं तद्रागयोजितम् ॥ ३८

यथा—भवतां भूतये भूयाद् भवानी भववल्लभा।
अङ्गीकृतसुसङ्गीतभृङ्गी[2] मुदितमानसा ॥ ३९

भवतां-पुरोदेशगतेन पताकेन, भूतये-पुरोदेशोदूर्ध्वोत्थिताभ्यामलपल्लवाभ्यां, भूयात्—उद्वेष्टिताधोमुखगतेन पताकेन, भवानी-वामवक्षोरुहतटगतस्वसंमुखगोमुखेन, भव-ललाटगतसूच्यास्येन। वल्लभा-हृदयगतचतुरेण। अङ्गीकृत-मुखस्थकपोतेन। सुसङ्गीत-मुखदेशगतहंसास्येन। भृङ्गी-कम्पितपुरोदेशगतेन त्रिपताकेन। मुदित-पुरोधस्तदूर्ध्वोत्थितेन[3] वामेनालपल्लवेन। मानसा-हृदयगतेन व्यावर्त्तितपरिवर्त्तित—दक्षिणसंदंशेन ॥

ततस्तत्रैव शीघ्रेण पार्श्वयोरग्रतः क्रमात्।
कमलवर्त्तनिकामादौ मकरवर्त्तनिकां ततः ॥ ४०

मायूरीं भानवीं मैनीं हयलीलां मृगीं तथा।
हंसीं च कुक्कुटीं पश्चात् खञ्जनीं गजगामिनीम्।
दर्शयेयुः क्रमात् [4]तज्ज्ञाः संप्रदायानुसारतः ॥ ४१

पताकौ मणिबन्धस्थौ शिथिलौ स्वस्तिकौ पुनः।
मण्डलभ्रमितौ श्लिष्टौ ख्यातौ कमलवर्तनौ ॥ ४२

यदा तु मकरौ हस्तपुरस्तात् पार्श्वयोरपि।
व्यावर्तनाद् बहिश्चान्तस्तदा मकरवर्तना ॥ ४३

बर्हिबर्हकलाकारौ करौ कृत्वोर्ध्वतः क्रमात्।
शनैरुच्चालितौ पादौ मायूरीस्फुरणं ततः ॥ ४४

भानोर्गतिरिवालक्ष्ये हस्ताभ्यां मण्डलाकृतिः।
सव्यापसव्ययोरूर्ध्वक्रियया भानवीगतिः ॥ ४५

1 Ms ऋषि. 2 Ms भंगी. 3 Ms °स्थितेन. 4 Ms °तज्ज्ञाः

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ह्रदान्तःस्थितपाठीनो यथा वसति वीचिषु ।
पार्श्वयोरुभयोस्तद्वत्क्रियया मैनवीगतिः ॥ ४६

पादपार्श्वयुगे स्थित्वा धरण्यां सञ्चरेद् द्रुतम् ।
मध्ये च स्थीयते तत्र गतिरुक्तानुरङ्गिणी ॥ ४७

चकिताक्षी कुरङ्गी च पश्यन्ती गीतपद्धतिम् ।
आकर्णयन्ती यदि सा हारिणीगतिरीरिता ॥ ४८

मरालीं च पुरस्कृत्वा भावहावादिपूर्वकम् ।
मन्मथोद्दीपना दृष्टिः कथिता हंसिनीगतिः॥ ४९

युगपत् स्फुरणात् पक्षपादयोः साचिमण्डले ।
मत्तकुक्कुटवद् यत्र कौक्कुटीगतिरीरिता ॥ ५०

त्रिपताकौ करौ कृत्वा [1]जानू सङ्कुच्य शीघ्रतः ।
पादाग्रतश्चरित्वा[2] तु स्थीयते खञ्जनीगतिः ॥ ५१

समपादेन च स्थित्वा मन्दं मन्दं चरेत् ततः ।
गम्भीरश्चाङ्गदृष्टिश्चेद् गजलीलागतिर्मता ॥ ५२

गतीनां सानुकूलत्वं भजेयुश्चरणादयः ।
ततोऽग्रे सव्यहस्ताङ्घ्री युगपत् क्रियया क्रमात् ॥ ५३

वैष्णवं च हयक्रान्तं प्रत्यालीढं[3] च मोक्षणम् ।
कुर्यात् तदा वामहस्तशिखरो हृदि संस्थितः ॥ ५४

पताकोऽधस्तलश्चान्यः स्वपार्श्वे च प्रसारितः ।
चित्रकलासकं तत्र मोक्षे सम्यक् प्रयोजनम् ॥ ५५

इति मुखचालिः ॥

यतितालस्यस्थानचारीहस्तात्मकं तु यत् ।
तन्नृत्तमुरुपं प्रोक्तं बुधैर्द्वादशधोदितम् ॥ १

नेरिः करणनेरिश्च मिश्रं चित्रं च नत्रकम् ।
अदृष्टपृष्ठतुल्लं च तोलरूपं च सीलुकम् ॥ २

तुल्लं च प्रसरं चैव कर्तरी होलुनामकम् ।
द्वादशेति समाख्याता, अथ लक्षणमुच्यते ॥ ३

1 Ms जानु. 2 Ms त्तु° 3 Ms °लीढे.

चतुरस्रे स्थितिर्यत्र रासतालश्चिरो लयः ।
रथचक्रैकपादेन परेण च यथोचितम् ॥ ४
गतिः पताकहस्तश्च प्रत्याशं तलसञ्चतः ।
नीवीवद्गतिसञ्चारः क्रमात् सव्यापसव्ययोः ॥ ५
रेखासौष्ठवसंपन्नः स शुद्धो नेरिरुच्यते ।
उरुपेष्वपि सर्वेषु विना दृष्टकपृष्ठकम् ॥ ६
ब्राह्यभ्रमरिकां बद्ध्वा मुक्तिः स्याच्चतुरस्रके ।
छत्रभ्रमरिका किन्तु भवेत् करणनेरितः ॥ ७

इति नेरिः ॥

झंपातालः सगोपुच्छो[1] हस्तकोत्पलपल्लवः ।
पार्श्वोर्ध्वजानुनी दण्डपक्षं तलविलासितम् ॥ १
विद्युद्भ्रान्तं ततश्चन्द्रवर्त्तनामनि शुंभितम् ।
ललाटतिलकं पश्चात् लतावृश्चिकसंज्ञकम् ॥ २
नवभिः करणैरेभिः क्रमात् सव्यापसव्यतः ।
कृत्वालीढे स्थितिर्यत्र नेरिः करणपूर्वकः ॥ ३

इति करणनेरिः ॥

यत्रानेकस्थितिः क्रीडा गोपुच्छाद्यं ततः समा ।
सवालमकरा लास्यश्चारी नूपुरपादिका ।
त्रिसञ्चं [2]सौष्ठवं रेखा प्रत्याशं भिन्नमुच्युते ॥ १

इति भिन्नम् ॥

तिर्यङ्मुखा प्रधानेन मध्ये काचिद् यथोचिता ।
गतिः सवालककरस्त्रिपताकः ससौष्ठवम्[3] ॥ १
त्रिसञ्चेन पिपील्या च मल्लिकामोदतालतः ।
शोभितं यत्र दिग्भावैश्चित्रं तत्स्थितिरीप्सिता ॥ २

इति चित्रम् ॥

मरालगतिका यत्र मध्ये गत्यान्ययान्विता ।
समतालप्रयोगेण यतिभेदेन राजितम् ॥ १

---

1 Ms पुछो. 2 Ms सौष्ठुवं. 3 Ms °ष्ठु.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विचित्रभ्रमरो बालक्रीडासाधनचक्रवत् ।
स्थितिर्यथेप्सिता तद्विग्रजकं नत्रमुच्यते ॥ २

इति नत्रम् ॥

करिहस्तागतिर्यत्र काचिन्मध्ये यथेप्सिता ।
रचातालः सुयतिवान् [1]मध्यमानेनावस्थितिः ॥ १
विचित्रचतुरो हस्तो दिक्षु सज्जनमोहनम् ।
अदृष्टपृष्ठपूर्वं तत् तुल्लं सद्भिर्निगद्यते ॥ २

इत्यदृष्टपृष्ठतुल्लम् ॥

काश्चित् तालानुपक्रम्य प्रयोगे बहुलद्रुतान् ।
संकीर्णानेकगतिभिः प्रवृत्तं सुमनोहरम् ।
[2]ध्रुवाडाख्यं च [3]तज्ज्ञेयं तालरूपं विचक्षणैः ॥ १

तद् यथा ।

हस्तबाह्वङ्घ्रिभिः सव्यैर्वामयद्वाहुहस्तकैः ।
षड्भिरङ्गैश्चतुर्भिर्वा तालैस्तत्तन्मितोऽङ्ककैः ॥ १
समानमात्रलान्तैश्च द्रुतलघ्वादिकैर्यदि ।
पूर्वं पूर्वं परित्यज्य त्वग्रिमाग्रिममाश्रितैः ॥ २
एकदा वान्यतालेन नृत्तं कुर्यान्नटाग्रणीः ।
चक्रबन्धं तदाख्यातं नृत्तविद्याविशारदैः ॥ ३

इति चक्रबन्धः ॥

तालानां तुल्यमात्राणां षण्णां[4] दलघुरूपिणाम् ।
समद्विभागलान्तानां प्रत्येकं द्विदलं समम् ॥ १
कृत्वा तत्पूर्वपूर्वार्द्धं षट्सु स्थानेषु योजयेत् ।
चरमं चरमं वार्द्धं तत् तत् पूर्वं ततः क्रमात् ॥ २
प्रयोजिते तदा ताला द्वादश प्रभवन्ति हि ।
चक्रबन्धवदन्यत् तु रविचक्रं भवेदिति ॥ ३

इति रविचक्रम् ॥

चतुर्णामेव तालानां रविचक्रोक्तलक्षणम् ।
चतुःषु हस्तपादेषु पूर्वपूर्वदलं न्यसेत् ॥ १

1 Ms °नेमव°. 2 Ms. कुवाडा°. 3 Ms तज्ञेय°. 4 Ms षणा.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तत् तत् परदलं हस्तपादयोर्मेलयेन्मिथः ।
सव्यापसव्ययोस्तत्र वसुताला भवन्ति हि ।
पद्मबन्धमिति ख्यातं शेषं स्याद् रविचक्रवत् । २
इति पद्मबन्धम् ॥

चतुर्णां तुल्यमात्राणां तालानां दलरूपिणाम् । 200
समत्रिभागलान्तानां प्रत्येकं तु पृथक् पृथक् ॥ १
त्रिविभागान् क्रमात् कृत्वा कराङ्घ्रिष्वथ योजयेत् ।
स्वस्थाने च तृतीये च द्वितीये तालखण्डकान् ॥ २
प्रतितालं क्रमान्न्यस्य नटो नृत्तं समाचरेत् ।
नागबन्धं तदा [1]प्रोक्तमन्यत् स्यात् पद्मबन्धवत् ॥ ३
इति नागबन्धम् ।

चतुर्णामेव तालानां पद्मबन्धोक्तलक्षणम्[2] ।
स्थापयेत् पूर्वपूर्वार्धं परार्धं चारयेन्मिथः ॥ १
हस्तयोः पादयोस्तद्वद्धस्ताङ्घ्र्योरुभयोस्तथा ।
सव्यापसव्ययोर्हस्तपादयोः स्वाग्रतः क्रमात् ।
अन्यतालकृतं नृत्तं वृक्षबन्धं तदोदितम् ॥ २
इति वृक्षबन्धतालरूपकम् ॥

हंसपक्षकरो यत्र हंसलीलः कुलीरिका ।
अन्या तदङ्गिनी काचित् प्रतिदिक्षु प्रसारणम् ॥ १
वानरक्रीडिताकारं तलसञ्चेन सीलुकम् ।
तदेव जारमानाख्यं निगदन्त्यपरे जनाः ॥ २
इति सीलुकम् ॥

अश्लिष्टाख्या गतिर्यत्र काचिदन्तर्मनोहरा ।
सक्षिप्रगजलीलाश्च वर्त्तना पद्मकोशयोः ।
प्रतिदिक्स्थानकं तुल्लं तत् क्रमं जलकीटवत् । १
इति तुल्लम् ॥

विलम्बितैकताली च हस्तावाविद्धवक्रकौ ।
पार्ष्णिरेचितिका चारी काचिन्मध्ये यथेप्सिता ।
यत्र तत् प्रसरं प्रोक्तं स्थित्यादिकमनोहरम् ॥ १
इति प्रसरम् ॥

1 Ms प्रोक्तं. 2 Ms लक्ष्मणाम्.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ऊरुवेणीगतिर्यत्र मध्येऽप्यन्या तदीप्सिता ।
उरोवर्त्तितकौ हस्तौ सुलयो लघुशेखरः ।
स्थितिदिग्भेदतो विद्युद्गतिवत् कर्तरी मता ॥ १

इति कर्तरी ॥

पश्चात्क्षिप्तावुरःक्षेत्राद् यत्र स्यातां लताकरौ ।
स्तम्भक्रीडनिका चारी मध्ये काचिद् यथोचिता ॥
यतिलग्नः समुत्पाद्यः प्रत्याशं गतिचित्रितम् ।
पलाशिगृध्रक्रीडा[1]यास्तद्धोल्लुमिति कीर्तितम् ॥ २

इति होल्लु । इति द्वादश उरुपाणि ॥

आद्यन्ते भ्रमरी यत्र सुलूनां त्रितयं हृदि ।
भुजंगत्रासितामोक्षे तद्धुवाडः समीरितम् । १
अन्ते सर्वधुवाडानामन्तर्भ्रमरिका मता ।
कलविंकविनोदाख्यं [2]तार्क्ष्यं यक्षविलासितम् ॥ २
विद्युद्विलासितं वात्यावर्त्तितं रविसञ्चरम् ।
नर्त्तनाभरणं तिर्यक्[3]ताण्डवं रङ्गभूषणम् ॥ ३
वादीशगजभैरूडं रोलंबांगविलासितम् ।
पक्षिशार्दूलकं सिंहप्लुतकं द्वादशेति च ।
इत्यूर्ध्वाधःकृतं पूर्वं वक्ष्ये तल्लक्षणं क्रमात् ॥ ४

[लक्षणानि]

चक्रभ्रमरिनिःशङ्कौ डांडुहोरमयी क्रमात् ।
यदोत्प्लुत्योक्तमोक्षश्चेत् कलविंकविनोदकम् ॥ १
चक्रभ्रमरिका यत्र होमेयीडांडुकौ मतौ ।
निःशङ्क उक्तन्यासः [4]स्यात् तार्क्ष्यपक्षविलासिते ॥ २
चक्रभ्रमरिकाडांटू निःशङ्को होमेयी ततः ।
यदा प्रागुक्तमोक्षः स्यात् तदा विद्युद्विला
चक्रभ्रमरिहोमेय्यौ ततो निःशङ्कडांडुकौ ।
उक्तमुक्तिः क्रमाद् यत्र वात्यावर्तितकं च तत् ॥ ४

1 Ms °डा तद्धो°. 2 Ms तार्क्ष्य. 3 Ms °का. 4 Ms स्यः ता°.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बाह्यभ्रमरिका पश्चाद् डांडुको होर्मंयी ततः ।
निःशङ्कश्चोक्तमोक्षोऽपि यत्र स्याद् रविसञ्चरः ॥ ५
बाह्यभ्रमरिनिःशङ्कौ होर्मंयीडाण्डुकौ ततः ।
पूर्वोक्तमोक्षणं यत्र नर्त्तनाभरणं च तत् ॥ ६
बाह्यभ्रमरिका यत्र त्वडालुर्होर्मंयी ततः ।
रायरङ्गालुरुक्तांत्यस्तत् तिर्यक् ताण्डवे भवेत् ॥ ७
बाह्यभ्रमरिकारायरंगालुर्होर्मंयी ततः ।
अडालुरुक्तमोक्षश्च यत्र तद्रङ्गभूषणम् ॥ ८
तिरपादिभ्रमर्यत्र डांडुश्चाडंतरस्ततः ।
वादीशगजभैरूडे होर्मंयी चोक्तमोक्षकः ॥ ९
तिरपाद्या भ्रमर्यत्र क्रमाद्धोर्मंयिडांडुकौ[1] ।
रायरंगालुरुक्तान्त्यो रोलंबांगविलासिते ॥ १०
तिरपभ्रमरी चादौ त्वडालुर्डाण्डुकौ ततः ।
निःशङ्क उक्तमोक्षोऽपि पक्षिशार्दूलकं हि तत् ॥ ११
तिरपभ्रमरी यत्र रायरंगालुडाण्डुकौ ।
होर्मंयी चोक्तमुक्तिः स्यात् तदा सिंहप्लुतं हि तत् ॥ १२

इति द्वादश धुवाडानि ॥

इत्युक्ता लागवोऽन्येऽपि सुलूपूर्वं पृथक् पृथक् ।
एकावृत्त्या द्विरावृत्त्या क्वचिदन्येन वा सह ।
उत्प्लवन्ति नटा यत्र ते सर्वे विड्डुलागवः ॥ १
अडालू रायरंगालुर्निःशंको होर्मंयी तथा ।
डांडु श्चाडंतरोदिंडू रायादिः पक्षिसालुवः ॥ २
अलगंढें किकावीसुस्तथामुंगरणं ततः ।
कर्त्तर्यलागपूर्वौ द्वौ दिंडिकौ वाथ लक्षणम् ॥ ३
सुलूं बद्ध्वा यदोत्प्लुत्य चरणौ पक्षिपक्षवत् ।
भ्रामयित्वा पतेद् भूमौ तदा डालुरितीरितः ॥ ४
सुलूं बद्ध्वैकपादेन सहैवानुपतेद् दिवि ।
द्वितीयोऽपि तदा रायरंगालुं तद्विदो विदुः ॥ ५

1 Ms °डाडुकौ.

गुल्फपूर्वं यदोत्प्लुत्य मिलितौ चरणौ समौ ।
दूरं भूमौ निपततः स निःशंकः प्रकीर्त्तितः ॥ ६
यत्र स्वस्तिकमावर्त्य पादः पृष्ठगतो यदा ।
लङ्घयेदङ्घ्रिणान्येन प्रोक्ता सा होर्मयी तदा ॥ ७
पुरः प्रसार्य चरणं लङ्घयेदपराङ्घ्रिणा ।
गुल्फपूर्वं तदा सद्भि[1]र्डांडुरित्यभिधीयते ॥ ८
पुरतोऽपिहितौ[2] पादौ डांडुरेवाप्यनन्तरः ।
उत्प्लुत्य चरणद्वन्द्वं वस्त्रनिःपीडनोपमम् ॥ ९
परिभ्राम्यावनीं याति तदिदं दिंडुमुच्यते ॥
व्योम्नि निःशंकदिंडुभ्यां रायादिः पक्षिसालुवः ॥ १०
अधोमुखः [3]समुत्प्लुत्य निपत्य पुरतो यदि ।
कुक्कुटासनमाबध्य स्थिरश्चेदलगं तदा ॥ ११
समौ पादौ यदान्यस्मि[4]न्पार्श्वे त्वपरपार्श्वतः ।
उत्प्लुत्य पातयेच्चित्रं तदा ढेंकीति कथ्यते ॥ १२
भूमावेकं समास्थाय द्वितीयं पूर्ववद् यदा ।
पातयेच्चरणौ व्योम्नि तं बीसं मुनिरब्रवीत् ॥ १३
संहतात्पुरमुत्प्लुत्य तनुवृत्त्या पराङ्मुखः ।
महीतले यदासीनो मुंगरणं कुक्कुटासने ॥ १४
तमेव विपरीतेन हिंगरणं केचिदूचिरे ।
होर्मयीकर्त्तरीपूर्वं कार्तरी डिंडुमूचिरे ॥ १५
गगने लगदिंडुभ्यामुच्यते लगदिंडुकः ॥ १६
इत्यादि बहवो भेदा सन्ति ते बिडुलागवः ।
लोकवृत्त्यानुसारेण ज्ञातव्यास्ते यथोचिताः ॥ १७

इति बिडुलागवः ।

बाह्यान्तस्तिरपच्छत्रचक्राद्या भ्रमरिका यथा ।
दक्षिणेनाङ्घ्रिणा स्थित्वा वाममङ्घ्रिं च कुञ्चयेत् ।
वामावर्त्तं भ्रमेद् यत्र सा बाह्या भ्रमरी मता ॥ १

1 Ms दाडु°. 2 Ms °पिलितौ. 3 Ms °प्लुत्य. 4 Ms °पार्श्वे.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

एतस्यास्तु विपर्यासादन्तर्भ्रमरिका भवेत् ।
तिरपभ्रमरी तिर्यक् द्वावङ्घ्री स्वस्तिकात् परम् ॥ २
त्रिविक्रमाकारधारि स्थानमास्थाय यत्र तु ।
वामावर्त्तं भ्रमेदाहुस्तां छत्रभ्रमरीं बुधाः ॥ ३
चक्रभ्रमरिकाखण्डसूच्यर्द्धे चक्रवद्भ्रमात् ।
अन्याश्च काश्चिद् विज्ञेया भ्रमर्यो लोकवृत्तितः ॥ ४

इति भ्रमर्यः ।

तालधारिण्यभिव्यक्तं तादिकं वर्णसन्चयम् ।
समुच्चरति षड्गादिमगणादिगणान्वितम् ॥ १
चतुरस्रं समाधाय विधाय शिखरं करम् ।
नाभावेकमुरोदेशादपरं पुरतः परम् ॥ २
पताकहस्तकाद्यन्यतमं कुर्यात् प्रयत्नतः ।
आद्यशब्दाक्षरोत्पत्तिहेतुकं सुभगं ततः ॥ ३
एकपादं पुरासूचीपरं चरणमश्चितम् ।
पश्चाद्धृत्याथ तं हस्तं तत्तत्करसमं यदा ॥ ४
व्यावर्त्तयेत् तमेवाङ्घ्रिं नयेत् पश्चात् तथापरम् ।
गात्रमात्रस्वरानङ्गैर्भावलोचनचेष्टितैः ॥ ५
पादाभ्यां दर्शयेत् तालं लयाच्छब्दाक्षराण्यलम् ।
नृत्येत् तदा शब्दनृत्तं नृत्तवद्भिरुदीरितम् ॥ ६

इति शब्दनृत्तम् ॥

यस्य गीतस्य यो रागस्तस्य यः स्याद् ग्रहस्वरः ।
षड्गादन्यतमः सोऽत्राभिनेयो हस्तकेन तु ॥ १
दक्षिणेनालपद्मेन वामेन चतुरेण च ।
परिमण्डलितेनाथ मयूरललितेन च ।
एवं विनिर्दिशेत् षड्गं लक्ष्यलक्षणकोविदैः ॥ २
हंसास्याभिधहस्तेन दक्षिणेनेतरेण तु ।
कटिस्थेनार्द्धचन्द्रेण समेन शिरसा तथा ।
ब्रह्माख्यस्थानकेनापि धीमान् रिषभमादिशेत् ॥ ३

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शुकतुण्डेन हस्तेन दृष्ट्या करुणया तथा ।
अधोमुखेन शिरसा [1]त्वश्वक्रान्ताभिधेन च ।
चार्याप्युचितया धीमान् गान्धारं स्वरमादिशेत् ॥ ४
[2]पताकौ स्वस्तिकौ कृत्वा शिरसा विधुतेन च ।
शैवाख्यस्थानकेनापि कटीच्छिन्नेन चापुनः ।
दृष्ट्या च हास्यया धीरोऽभिनेयो मध्यमस्वरः ॥ ५
कृत्वालपल्लवौ हस्तौ धुतेन शिरसा तथा ।
एवं विनिर्दिशेद्धीमान् स्वरं पञ्चमसंज्ञकम् ॥ ६
काङ्गूलहस्तकौ कृत्वा दृष्ट्या बीभत्सया तथा ।
परावृत्तेन मूर्ध्ना च प्रत्यालीढाभिधेन च ।
स्थानकेन विनिर्दिष्टो धैवतो निपुणैर्नटैः ॥ ७
[. . . . .] हस्तेन करिहस्तेन लीलया
दृष्ट्या विधूतशिरसा निषादं संनिरूपयेत् ॥ ८

इति स्वराभिनयः ॥

इहोदितस्य दिक्स्थानकरणैश्च निरूपितैः ।
समस्तैरथवा व्यस्तैस्तत्तत्कारानुरोधतः ॥ १
यत्र तालयुजा यत्या तन्नृत्यं सुमनोहरम् ।
ततः शब्देन तदनुद्ग्रहेण च ततः पुनः ॥ २
शब्देन तेनकैशब्दखण्डेन ध्रुवकेन च ।
पुनः शब्देन तदनु यतिगीतेन नर्त्तनम् ॥ ३
हावभावादिसुलयतालादिगतिसङ्गतम् ।
यदोल्लासलसद्गात्रं पात्रमारचयेत् तदा ।
स्वरमञ्चकनृत्यं स्याल्लक्ष्यवेदिमनोहरम् ॥ ४

इति स्वरमञ्चनृत्यम् ॥

गीततानग्रहसमं समुच्चरति तादिकम् ।
पूर्ववद्वर्णसंघातं तालधारिणि हारिणि ॥ १
येन येनेह गीतेन नृत्येत् पात्रं ससौष्ठवम्[3] ।
तत्तन्नृत्यं बुधैर्देश्यं तत्तन्नामपुरःसरम् ॥ २

1 Ms °न्व. 2 Ms पाताकौ. 3 Ms °ष्ठु°.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

स्थाप्यादिवर्णानङ्गैन भावान् नेत्रादिरागतः ।
हस्तैरभिनयेदर्थान्[1] [2]तत्तद्वाक्यसमुद्भवान् ॥ ३

तालग्रहानङ्घ्रिपदैः समादिश्य यथोचितम् ।
अनेनैव प्रकारेण गीतनृत्तं समाचरेत् ॥ ४

एलादयः शुद्धसूडावर्णाद्यालिक्रमास्तथा ।
श्रीरङ्गाद्या विप्रकीर्णास्तथा सालगसूडकाः ॥ ५

तथान्येऽपि प्रसिद्धाश्च[3] त्वप्रसिद्धा यथोचिताः ।
सार्थाङ्गं नृत्यवन्नृत्येन्निरर्थाङ्गं तु नृत्तवत् ॥ ६

इति गीतनृत्यम् ॥

देशी द्राविडदेशस्य चिंदुरित्यभिधीयते ।
तत्पोढा दृश्यते शुद्धचिन्दुश्च बिन्दुचिन्दुकः ॥ १
तिरुवणी चिन्दुको माला चिन्दुकः कोलचारिकः ।
गीतमुद्रादिकश्चिन्दुरिति तल्लक्षणं यथा ॥ २
यत्रोद्ग्राहध्रुवपदो बद्धो द्राविडभाषया ।
तच्छुद्धचिन्दुकः प्रोक्तो मेलापाभोगवर्ज्जितः ॥ ३

इति शुद्धचिन्दुः ॥

यत्रोद्ग्राहं च मेलापं सकृद् गीत्वा ततो ध्रुवम् ।
प्रभुनामाङ्कितं द्वित्रिविरामाढ्यं मुहुर्मुहुः ।
गीत्वा ध्रुवेषु मोक्षः स्याच्चेत् तदा बिन्दुचिन्दुकः । १

इति बिन्दुचिन्दुः ॥

नेतृनामाङ्कितोद्ग्राहस्तन्मानात् सार्धकध्रुवः ।
एतद् द्वयं मुहुर्गायेत् तदा तिरुवणिं विदुः ॥ १

इति तिरुवणिचिन्दुः ॥

अनियतपादभागे माला मालादिचिन्दुकः ॥ १

इति मालाचिन्दुः ॥

यत्र पाटाक्षरालापस्ततो वाक्यमतात्मकम् ।
पदरागसमुद्दीप्तं तत्कथावीजसूचकम् ॥ १

---

1 Ms °नयेन°. 2 Ms यद्वा°. 3 Ms श्चा.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ततश्च चिन्दवः पञ्च सप्त वा मध्यमध्यतः ।
पिल्मिरूकैमिरूरम्यकलासैरिति चित्रितम् ॥ २
शास्त्रसङ्गकथावृत्तिश्चेत् तदा कोलचारिका ।
अन्यत्कथाप्रवृत्तिश्चेत् तदा कट्टेण चिन्दुकः ॥ ३

इति कोलचारीचिन्दुः ॥

गीतवद्गीतमुद्रादिचिन्दुकोऽष्टविधः स्मृतः ।
मेलापकान्तराभोगसमस्तव्यस्तहीनतः ।
द्वित्रिश्चतुःपञ्चधा तु चिन्दवः परिकीर्तिताः ॥ १
यदि प्रयोगो मेलापे क्वचित् प्रयोगको ध्रुवे ।
तदोद्ग्राहे च मुक्तिः स्याद् यदि प्रयोगकोऽन्तरे ।
तदा तु ध्रुवके मोक्ष एवं न्यासस्तु सर्वदा ॥ २

इति गीतमुद्राचिन्दुः ॥

स्यन्द्यपस्यन्दिताध्यर्धस्थितावर्त्तादिमुख्यतः ।
वैशाखमण्डलालीढप्रत्यालीढादिभिस्तथा ॥ १
रेखा[1] सौष्ठवलास्याङ्गैः शिरोऽङ्घ्रिकररेचकैः ।
भावहावविलासैश्च सुलूचित्रकलासतः ॥ २
चारुपाटानुगं चंचत्किङ्किणीध्वनिपेशलम् ।
तत्तज्जातियुतं वेषभाषासाहित्यशोभितम् ।
संप्रदायानुसरणं चिन्दुनृत्यं समाचरेत् ॥ ३
यत्र किङ्किणिकावाद्यैराहतिर्घर्घरो [2]मतः ।
पिडिवाटः शिरिपिडी पटयो लगपाटकः ।
शिरितिरः खलुखलुश्चेति घर्घरः षड्विधो मतः ॥ ४
दिशानयापरेऽप्यूह्या घर्घराः शोभयान्विताः ।
सर्वे घर्घरभेदास्ते कार्यास्तालानुगामिनः ॥ ५

इति चिन्दुनृत्यम् ॥

तैलङ्गभाषया बद्धा तूद्ग्राहाभोगवर्जिता ।
सा धरू कथिता धीरैः सा द्विधा परिकीर्त्तिता ॥ १
मुख्या तु कद्दडिधरू तथा मुक्तधरू परा ।
कद्दडिर्बन्धपर्यायस्त्वादौ तत्क्रममुच्यते ॥ २

---

1 Ms सौष्टुव. 2 Ms °थंधरो.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अर्द्दिके[42] वाद्यमानेऽपि यत्र पात्रं धृताञ्चलम् ।
रङ्गं प्रविश्य तत्रादावालापेन तु नर्त्तनम् ॥ १

तत्तत्करादिभिः पाटैर्लयतालसमन्वितम् ।
धात्वादिरहितं गीतमालापः परिकीर्तितम् ॥ २

ततः स्यात् ससुलूतुङ्गलास्याङ्गैश्च समन्वितम् ।
विचित्रचरणं साक्षाद्रागमूर्त्तिरिवाङ्गकैः ॥ ३

दर्शयन् पिल्मुरुकैर्मुर्वादिभिर्मध्यमध्यतः ।
त्रिचतुःपञ्चषट्सप्तधरूभिः सह पट्टिभिः ।
भावहावसुलास्याङ्गनर्त्तनं तनुयान् नटी ॥ ४

विलम्बितोच्चारमानं यदेकयतिसुन्दरम् ।
अतालं पदमेकं चेद् बद्धः कर्णाटभाषया ।
सा पट्टिः कथिता [43]तज्ज्ञै रसिकानन्ददायिनी ॥ ५

ततः कलासतो रम्यैर्द्रुतमानस्वरैः पुनः ।
कैमुरुशब्दतः पश्चाच्चित्रं नर्तनमाचरेत् ॥ ६

ताल-तन्त्रीमृदङ्गानां समन्तान्मेलनं यदा ।
नर्माङ्गं नर्त्तनं यत्र सुलुपं तन्निगद्यते ॥ ७

तालतुल्यसुलू तुङ्गवर्घरध्वनिपेशलम् ।
पुनः कलासशब्देन द्विरावृत्तिपदेन च ॥ ८

विधाय नर्तनं त्वर्द्दिनाम्नि न्यासं समाचरेत् ।
तदा कद्दडि नृत्यं स्याद् देशी तैलङ्गदेशजा ॥ ९

नमनोन्नमनं तुङ्गमूर्ध्वाधः सौष्ठवस्य च ।
चतुर्विरामकैर्बद्धैः पदैरुद्ग्राहनिर्मितम् ॥ १०

तालेन येन केनापि युतं तत्पदसंज्ञकम् ।
एतदुक्ते विपर्यासाद्वा धरूकद्दडिर्मता ॥ ११

इति कद्दडिधरू ।

धरूपूर्वाधंके यत्र पिलिमरूं संप्रयुज्य च ।
पुनः पूर्वाधंकं पश्चाच्चरमं नृत्यमाचरेत् ॥ १

42 Ms. अर्द्दिको. 43 Ms. तज्ञै°.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तालस्य लयभेदेन कतिवारं तु नर्तयेत् ।
अथवान्यधरूपूर्वपूर्वाः इंनतरा परा ।
तालद्रुतलयोऽप्यत्र सा प्रोक्ता मुक्तिकाधरू ॥ २

इति मुक्तिकाधरू । धरूनृत्यम् ।

गीर्वाणमध्यदेशीयभाषासाहित्यराजितम् ।
त्रिचतुर्वाक्यसंपन्नं नरनारीकथाश्रयम्[44] ॥ १
शृङ्गाररसभावाढ्यं रागतालपदात्मकम् ।
पादान्तानुप्रासयुतं पादान्तयमकं तथा ॥ २
प्रतिपादं यत्र बद्धमेवं पादचतुष्टयम् ।
उद्ग्राहध्रुवकाभोगान्तरध्रुवपदं स्मृतम् ॥ ३
गीयमाने ध्रुवपदे हावभावमनोहरे ।
नर्त्तनं तनुयात् पात्रं कान्तादृष्ट्यादिसन्मुखम् ॥ ४
नानागतिलसद्गात्रं लसल्लास्याङ्गसुन्दरम् ।
पदान्तरान्तरागा यद् दन्तोद्योतितरङ्गकम् ॥ ५
खण्डमानेन रचितं मध्ये मध्ये च कम्पनम् ।
सर्वाभिनयसंपन्नं रेखालावण्यशोभितम् ॥ ६
तदा ध्रुवपदं नृत्यं मुखरागविभूषितम् ।
स्यादक्षिभ्रूविकारादिशृङ्गाराकृतिसूचकः ।
सग्रीवरेचको हावो भावश्चित्तसमुद्भवः ॥ ७

इति ध्रुवपदम् ॥ इति निबन्धनृत्यम् ॥

अथानिबन्धनृत्यस्य क्रमं वक्ष्यामि लोकतः ।
नामावली यतिर्नेरिर्नेरिः सालङ्गपूर्वकः ॥ १
सङ्कीर्णनेरिर्भावादिर्नेरिश्च नडनेरिकः ।
कैवर्तनं गुरुरट्टे गुरू च तालरूपकम् ।
गुण्डालं कमलं मण्डी मुडुपं च पुरण्डरी ॥ २
कुडुपं तिर्यक्करणं लावणी चटुकं ततः ।
नानादेशोद्भवा देशी तत्तद्दिक्शास्त्रता इति ॥ ३

[लक्षणानि]

यथाभिनयसंपन्नं विचित्रगतिसुन्दरम् ।

44 Ms. °कृथा°.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तीव्रदृटिग्रहभेदेन लयतालसमन्वितम् ।
नामावली नृत्तमिदं नृत्येज्जनमनोहरम् ॥ १

इति नामावली ॥

विरामसाम्यगतिभिर्लगैर्नानामनोहरैः ।
लयतालविचित्राङ्गैर्यतिनृत्तं समाचरेत् ॥ १

इति यतिः ॥

आदितालानुगं यत्र विलम्बितलयान्वितम् ।
विचित्रगतिसंपन्नं सामान्या नेरिरिष्यते ॥ १

[इति नेरिः]

सा एवायुतसंयुक्तहस्तैः सालङ्गनेरिका ॥ १

[इति सालङ्गनेरिः]

युक्तायुक्तैर्नृत्तहस्तैः सङ्कीर्णा नेरिरुच्यते ॥ १

[इति संकीर्णनेरिः]

रसभावाङ्गदृष्ट्याद्यैर्भावनेरिः प्रकथ्यते ॥ १

[इति भावनेरिः]

स एव द्रुतमानेन नडनेरिरिति स्मृता ॥ १

[इति नडनेरिः]

मणिबन्धयुतौ हस्तौ भ्रामयेत् सविलासकम् ।
सव्यापसव्ययोर्यत्र तद्योग्यगतिसुन्दरम् ।
विदध्यान्नर्त्तनं सम्यक् तदा कैवर्त्तनाभिधम् ॥ १

[इति कैवर्तनम्]

यत्राङ्गं मोटयेत् तिर्यग् विक्षिप्ताक्षिप्तकौ मुहुः ।
त्रिपताकौ पुरा पात्रं सा मुरू कथ्यते बुधैः ॥ १

[इति मुरू]

उत्कटस्थो नटो गात्रं मोटयेद् द्रुतमानतः ।
वपुः पुनः पुनर्यत्र मुरूकं रङ्गपूर्वकम् ॥ १

[इति रङ्गमुरू]

किञ्चित्तालमुपक्रम्य प्रयोगे बहुलद्रुतम् ।
संकीर्णानेकगतिभिः प्रवृत्तं तालरूपकम् ॥ १

[इति तालरूपकम्]

जङ्घाया वाह्यमन्तर्यद्विद्ध्यद्भ्रमणं द्रुतम् ।
तालानुगति नृत्तं चेद् गुण्डालं कथितं तदा ॥ १

[इति गुण्डालम्]

बहुभिर्बाहुभेदैश्च सालपल्लववर्त्तनैः ।
कटीपार्श्वैशिरोरेख[45]पूर्वकं कमलं तदा ॥ १

[इति कमलम्]

पृष्ठाग्रसारिताभ्यां चेत् पादाभ्यां नतजानुकम् ॥ १

[इति नतजानुकम्]

पर्यायान्नर्तनं कुर्यात् तदा मण्डीति कीर्तिता ॥ १

[इति मण्डी]

यदा मुडुपचारीभि[46]र्नृत्येत् तालानुरोधतः ।
तदा मुडुपमित्युक्तं विचित्रगतिरञ्जितम् ॥ १

[इति मुडुपम्]

मुडुपस्थो नटो यत्र विधाय भ्रमरीं पुनः ।
पुनर्मुडुपमानृत्य नृत्येच्चेत् सा मुरण्डरी ॥ १

[इति मुरण्डरी]

कुञ्चिताङ्गुलिना यत्र प्रसृताङ्गुष्ठकेन चेत् ।
प्रसार्य जङ्घिकां कम्पं विचित्रद्रुतमाचरेत् ॥
घर्घरीभिः समायुक्तं तदेतत् कुडुपं मतम् ॥ १

[इति कुडुपम्]

कश्चित्करणमास्थाय विदध्याद्भ्रमरीं यदा ।
अवसाने पुनः कश्चित्करणं समुपाश्रयेत् ।
एवं मुहुर्मुहुर्यत्र करणं तिर्यपूर्वकम् ॥ १

[इति तिर्यकरणम्]

---

45 Ms. रेख 46 Ms. नृत्ये[१]

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

समपादे स्थितं पात्रं कटिन्यस्तार्धचन्द्रकम् ।
कटेरुपरि तत्कायं भ्रामयेल्लावणी तदा ॥ १

[इति लावणी]

जानुभ्यां भूमिलग्नाभ्यां पद्भ्यां वा मण्डलाकृतिः ।
नम्रपृष्ठं लताहस्तौ पात्रं भ्रमणमाचरेत् ।
तदासौ चट्टुरित्युक्तः सूर्यमण्डलवद्गतिः ॥ १

[इति चट्टुः]

इत्यनिबद्धोरूपाणि ॥

यावनीभाषया युक्तं यत्र गीतं धृताञ्चलम् ।
कल्लादिगजराद्युक्तं कृत्याहगेन भूषितम् ॥ १

विदध्यान्नर्तनं नानालयत्रयविचित्रितम् ।
कोमलाङ्गैर्यदा नृत्यं भ्रमर्यादिविराजितम् ॥ २

सशब्दा च क्रिया यत्र ध्रुवशम्यादिभेदतः ।
यत्र चेष्टाविरहितं तन्नृत्तं जक्कडी मतम् ॥ ३

पारसीकैः पण्डितैस्तूद्ग्रहादिस्वरभाषया ।
तद् गीतं जक्कडीसंज्ञं यवनानामतिप्रियम् ॥ ४

[इति] जक्कडी ॥

मुरजादिषु वाद्येषु वाद्यमानेषु वादकैः ।
कुतूहलाय भूपानां वसन्ताद्युत्सवेषु चेत् ॥ १

क्रमाच्चत्वारि पात्राणि यद्वाष्टौ षोडशाथ वा ।
द्वात्रिंशद्वा चतुःषष्टिः सन्धीभूय वियुज्य च ॥ २

प्रनृत्यन्ति समादाय दण्डकौ पाणिपङ्कजैः ।
अङ्गुष्ठसम्मितौ स्थौल्ये दैर्घ्ये च षोडशाङ्गुलैः ॥ ३

स्वर्णादिधातुबद्धान्तौ सरलौ वर्तुलौ दृढौ ।
चित्रितौ वर्णकैर्ग्रन्थिवर्जितौ मसृणौ तथा ॥ ४

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तत्तद्देशानुसारेण धृत्वा वा दण्डचामरे ।
दण्डक्षौमाञ्चले यद्वा दण्डकाछुरिकेऽथवा ॥ ५

चतुर्भिः प्रश्नभिर्घातैर्यद्वा षड्भिः प्रहारकैः ।
सशब्दघातभेदैश्च पुरतः पृष्ठतोऽपि च ॥ ६

पार्श्वयोरुभयोस्तद्वद् घातभेदैस्ततः परम् ।
चारीभिर्भ्रमरीभिश्च चित्रैस्तैर्वामसव्यतः ॥ ७

असकृन्मण्डलीभूय गीतताललयानुगम् ।
तदोदितं बुधैर्दण्डरासं जनमनोहरम् ॥ ८

दण्डैर्विना कृतं नृत्यं रासनृत्यं तदेव हि ॥ ९

इति रासनृत्यम् । इत्यनिबन्धनृत्तम् ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

श्लोकपङ्क्ति–अनुक्रमणिका

[The first figure indicates the page number and the second figure the line number.]

अग्रतः क्षेपणाद्	२	२५
अङ्गीकृतसुसङ्गीतभृङ्गी	५	९४
अङ्गुष्ठमध्यमाङ्गुल्यौ	३	४६
अङ्गुष्ठसम्मितौ स्थौल्ये	२१	५५१
अडालुरुक्तमोक्षश्च यत्र	११	२५९
अडालू रायरंगालुर्निःशंको	११	२७२
अथवाऽहिफणाकारां	३	४०
अथवान्यधरूपूर्वपूर्वाः	१८	४४७
अथानिबन्धनृत्यस्य	१८	४६६
अदृष्टपृष्ठतुल्लं च तोलरूपं	६	१३८
अदृष्टपृष्ठपूर्वं तत्	८	१७४
अधस्तलपताकश्च वाहुस्तत्र	३	५१
अधोमुखेन शिरसा	१४	३३६
अधोमुखः समुत्प्लुत्य	१२	२९०
अन्ते सर्वधुवाडानामन्तर्भ्रमरि	१०	२३७
अन्यत्कथाप्रवृत्तिश्चेत् तदा	१६	३९३
अन्यतालकृतं नृत्तं	९	२११
अन्याश्च काश्चिद् विज्ञेया	१३	३१२
अन्या तदङ्गिनी काचित्	९	२१४
अनिबन्धं त्वनियमाद्	२	१५
अनियतपादभागे माला	१५	३८६
अनेनैव प्रकारेण गीतनृत्त	१५	३६६
अतालं पदमेकं चेद्	१७	४२९
अर्दिके वाद्यमानेऽपि यत्र	१७	४१९
अलगंढें किकाबीसुस्तथा	११	२७४
अवसाने पुनः	२०	५२६
अश्लिष्टाख्या गतिर्यत्र	९	२१८
असकृन्मण्डलीभूयगीतताल	२२	५६०
आकर्णयन्ती यदि	६	११९
आदितालानुगं यत्र	१९	४८१
आद्यन्ते भ्रमरी यत्र	१०	२३५
आद्यशब्दाक्षरोत्पत्तिहेतुकं	१३	३१९
आविद्धवक्त्रहस्ताभ्यां चार्या	३	३३
इत्युक्ता लागवेऽन्येऽपि	११	२६९
इत्युद्दिष्टं बन्धकस्य	२	२०
इत्युदूर्ध्वाधःकृतं पूर्वं	१०	२४३
इत्यादि बहवो भेदा	१२	३०१
इतस्ततोऽर्थपर्याय इङ्गने	२	३१
इष्टार्थं क्रियते	२	२८
इहोदितस्य दिक्स्थान	१४	३४९
उत्कटस्थो नटो	१९	४९९
उत्क्रमुक्तिः क्रमाद् यत्र	१०	२५१
उत्प्लवन्ति नटा यत्र	११	२७१
उत्प्लुत्य चरणद्वन्द्वं	१२	२८७
उत्प्लुत्य पातयेच्चित्रं	१२	२९३
उद्ग्राहध्रुवका भोगान्तर	१८	४५५
उद्वेष्टितेन वामेन	४	६५
उरुपेष्वेपि सर्वेषु	७	१४६
उरोवर्तितकौ हस्तौ	१०	२२७
ऊर्ध्वेर्ध्वाङ्गं यथा	४	७०
ऊरुवेणी गतिर्यत्र मध्येऽप्य	१०	२२६
एकदा वान्यतालेन	८	१८४
एकपादं पुरःसूचीपरं	१३	३२०
एकावृत्त्या द्विरावृत्त्या	११	२७०
एतद् द्वयं मुहुर्गायेत्	१५	३८४
एतदुक्ते विपर्यासाद्वा	१७	४४२
एतस्यास्तु विपर्यासादन्त	१३	३०७
एलादयः शुद्धसूडावर्णा	१५	३६७
एवं मुहुर्मुहुर्यत्र	२०	५२७
एवं विनिर्दिशेद्धीमान्	१४	३४२
एवं विनिर्दिशेत्	१३	३३१
कटिस्थेनार्धचन्द्रेण समेन	१३	३३३
कटीपार्श्वशिरोदेशपूर्वकं	२०	५०९
कटेरुपरि तत्कार्यं	२१	५३०
कदडिर्बन्धपर्यायस्त्वादौ	१६	४१८
कश्चित्करणमास्थाय	२०	५२५

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कमलवर्त्तनिकामादौ	५	१०२	गीतमुद्रादिकश्चिन्दुरिति	१५	३७५
कर्त्तर्यलागपूर्वौ द्वौ	११	२७५	गीततानग्रहसमं समुच्चरति	१४	३५९
करिहस्तकया चार्या	४	६४	गीतवद्गीतमुद्रादिचिन्दुको	१६	३९५
करिहस्तागतिर्यत्र काचिन्मध्ये	८	१७१	गीयमाने ध्रुवपदे	१८	४५६
कलविंकविनोदाख्यं	१०	२३८	गीर्वाणमध्यदेशीयभाषा	१८	४५०
कल्लादिगजरायुक्तं कृत्य	२१	५३८	गुण्डालं कमलं मण्डी	१८	४७०
काङ्गूलहस्तकौ कृत्वा	१४	३४३	घर्घरीभिः समायुक्तं	२०	५२३
काश्चित् तालानुपक्रम्य	८	१७६	चकिताक्षो कुरङ्गी	६	११८
किञ्चित्तालमुपक्रम्य प्रयोगे	२०	५०२	चक्रबन्धं तदाख्यातं	८	१८५
कुक्कुटासनमाबध्य स्थिरः	१२	२९१	चक्रबन्धवदन्यत्	८	१९२
कुडुकस्यां ततश्चा	२	५	चक्रभ्रमरिकाखण्डसूच्यर्द्धे	१३	३११
कुडुपं तिर्यकरणं लावणी	१८	४७१	चक्रभ्रमरिकाडांद्व निःशङ्को	१०	२४८
कुतूहलाय भूपानां	२१	५४७	चक्रभ्रमरिका यत्र	१०	२४६
कुञ्चिताङ्गुलिना यत्र	२०	५२१	चक्रभ्रमरिनिःशङ्कौ डांदु	१०	२४४
कुर्यात् तदा वामहस्तशिखरो	६	१३१	चक्रभ्रमरिहोर्मग्यौ ततो	१०	२५०
कैमुरुशब्दतः पश्चाच्चित्रं	१७	४३२	चतुर्णां तुल्यमात्राणां तालानां	९	२००
कोमलाङ्ग्यैर्यदा नृत्य	२१	५४०	चतुर्णामेव तालानां पद्मबन्धो	९	२०७
कृत्वा तत्पूर्वपूर्वार्द्धे	८	१८९	चतुर्णामेव तालानां रथिचक्रो	८	१९४
कृत्वालपल्लवौ हस्तौ	१४	३४१	चतुर्थीं दिशमासाद्य	४	७७
कृत्वालीढे स्थितिर्यत्र	७	१५५	चन्द्रत्रिनेत्रवाराष्ट	२	२३
कैवर्तनमुरूरट्टे	१८	४६९	चतुर्भिः पञ्चभिर्घातैर्यद्वा	२२	५५६
क्रमाच्चत्वारि पात्राणि	२१	५४८	चतुर्विरामकैर्बद्धैः पदैरुद्ग्राह	१७	४४०
खण्डमानेन रचितं मध्ये	१८	४६०	चरमं चरमं वार्द्धे	८	१९०
गगने लगर्दिड्डुभ्यामुच्यते	१२	३००	चतुरस्रे स्थितिर्यत्र	७	१४१
गणेशं भरतं	२	८	चतुरस्रौ करौ	३	५७
गत्यादिनियमैर्युक्तं	२	१४	चतुरस्रं समाधाय	१३	३१६
गतिं च सर्वदा	३	४९	चतुःषु हस्तपादेषु	८	१९५
गतिः पताकहस्तश्च	७	१४३	चार्याप्युचितया धीमान्	१४	३३७
गतिः सवालककरस्त्रिपताकः	७	१६२	चार्या सार्य्या सव्यसूची	३	५०
गतीनां सानुकूलत्वं	६	१२८	चारीभिर्भ्रमरीभिश्च	२२	५५९
गम्भीरश्चाङ्गदृष्टिश्चेद्	६	१२७	चारुपाटानुगं चंचत्-	१६	४०६
गात्रं तदनुसारेण	३	४२	चित्रकलासकं तत्र मोक्षे	६	१३३
गात्रमात्रस्वरानङ्गैर्भावलोचन	१३	३२३	चित्रितौ वर्णकैर्ग्रन्थिवर्जितौ	२१	५५३
गीत्वा ध्रुवेषु मोक्षः	१५	३८१	छत्रभ्रमरिका किन्तु	७	१४८

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जङ्गाया बाह्यमस्त	२०	५०३	तदासौ चटुरित्युक्तः	२१	५३४
जनितं करणं तत्र	४	७८	तदा तु ध्रुवके	१६	४००
जानुभ्यां भूमिलग्नाभ्यां	२१	५३२	तदा ध्रुवपदं नृत्यं	१८	४६२
ज्येष्ठाश्च ये	२	९	तदा मुड्डपमित्युक्तं	२०	५१६
झंपातालः सगोपुच्छो	७	१५०	तदेव जारमानाख्यं	९	२१६
डांटुश्चाडंतरोर्दिङ्ग	११	२७३	तदोद्ग्राहे च मुक्तिः	१६	३९९
तच्छुद्धचिन्दुकः प्रोक्तो	१५	३७७	तदोदितं बुधैर्दण्डरासं	२२	५६१
तत्तज्जातियुतं वेषभाषा	१६	४०७	तन्नृत्तमुरुपं प्रोक्तं	६	१३६
तत्तन्नृत्यं बुधैर्दृश्यं	१४	३६२	तमेव विपरीतेन	१२	२९८
तत्कमं नृत्ततत्त्वज्ञः	४	७४	तलपुष्पपुटं कृत्वा	५	८९
तत्षोढा दृश्यते शुद्धचिन्दुश्च	१५	३७३	तलमध्योर्ध्वसञ्ज्ञाख्याः क्रमेण	३	४१
तत् तत् परदलं	९	१९६	तलसञ्ज्ञमनुप्राप्य	३	४३
तत्तत्करादिभिः पाटैर्लयताल	१७	४२१	तालग्रहानङ्घ्रिपदैः समाविश्य	१५	३६५
ततोऽर्धरेचिताभ्यां	४	८३	तालतुल्यसुलूतुङ्गग्रंथरध्वनि	१७	४३५
ततोऽञ्जलिकरं कृत्वा	४	८६	तालद्रुतलयोऽप्यत्र सा	१८	४४८
ततोऽग्रे सव्यहस्ताङ्घ्री	६	१२९	तालधारिण्यभिव्यक्तं तादिकं	१३	३१४
तत्तद्देशानुसारेण धृत्वा	२२	५५४	तालस्य लयभेदेन	१८	४४६
ततस्तत्रैव शीघ्रेण	५	१०१	तालानां तुल्यमात्राणां	८	१८७
ततस्तु तलसञ्चेन	३	५६	तालानुगतिनृत्तं चेद्	२०	५०६
ततस्तु मध्यसञ्चेन	३	५३	तालेन येन केनापि	१७	४४१
ततस्तलमुखाभ्यां च	४	७१	तालं तन्त्रीमृदङ्गानां	१७	४३३
ततस्तलमुखाभ्यां च	३	५८	तीवटिग्रहभेदेन लयताल	१९	४५५
ततः कलासतो	१७	४३१	तिर्यङ्मुखा प्रधानेन	७	१६१
ततः कुलीरिका चार्या	४	६२	तिरपभ्रमरी तिर्यक्	१३	३०८
ततश्च चिन्दवः पञ्च सप्त	१९	३९०	तिरपभ्रमरी यत्र	११	२६६
ततश्चन्द्रे लीनकं	३	३५	तिरपादिभ्रमर्यत्र	११	२६०
ततः परं शब्दचालि	२	१७	तिरपाद्या भ्रमर्यत्र	११	२६२
ततः शब्देन तदनुद्ग्रहेण	१४	३५२	तिरुवणी चिन्दुको	१५	३७४
ततः स्यात् ससुलू	१७	४२३	तुलं च प्रसरं	६	१३९
तत्र कार्यं द्विधा	२	१३	तैलङ्गभाषया बद्धा	१६	४१५
तत्रैव चतुरस्रं	४	८२	त्रिचतुःपञ्चषट्	१७	४२६
तत्रैवाभिनयेन्नान्दी श्लोकं	५	९२	त्रिचतुर्वाक्यसंपन्नं-	१८	४५१
तथान्येऽपि प्रसिद्धाश्च	१५	३६९	त्रिपताकौ करौ	६	१२४
तद् गीतं जक्कडीसंज्ञं	२१	५४४	त्रिपताकौ पुरा पात्रं	१९	४५
तदग्रयोरन्तरालं	३	४७	त्रिविक्रमाकारधारि	१३	३०९
तदा कद्दडिनृत्यं	१७	४३८	त्रिविभागान् क्रमात्	९	२०२

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

त्रिसञ्च सौष्ठवं	७	१५९	नानादेशोद्भवा देशी	१८	४७२
त्रिसञ्चेन पिपील्या	७	१६३	नाभावेकमुरोदेशादपरं पुरतः	१३	३१७
तृतीयां दिशमासाद्य	४	५९	नामावली नृत्तमिदं	१९	४७६
दण्डक्षोमाञ्चले यद्वा	२२	५५५	नामावली यतिर्नेरिर्नेरिः	१८	४६७
दण्डैर्विना कृतं नृत्यं	२२	५६२	नीवीवद् गतिसञ्चारः क्रमात्	७	१४४
दर्शयन् पिल्मुरूकैमु-	१७	४२५	निःशङ्क उक्तन्यासः	१०	२४७
दर्शयेयुः क्रमात्	५	१०५	निःशङ्क उक्तमोक्षोऽपि	११	२६५
दक्षिणश्चरणस्तस्मान्निष्क्रम्य	३	५४	निःशङ्कश्चोक्त मोक्षोऽपि यत्र	११	२५३
दक्षिणेनालपद्मेन वामेन	१३	३२९	नृत्तमण्डपमध्यात् तु	२	१०
दक्षिणेणाङ्घ्रिणा स्थित्वा	१२	३०५	नृत्येत् तदा शब्दनृत्तं	१३	३२५
दक्षिणः खटकः	४	७९	नृत्वा चाविद्धवक्त्राभ्यां	४	७६
दिशानयापरेऽप्यूह्या घर्घराः	१६	४१२	नेतृनामाङ्कितोद्ग्राहस्तन्मानात्	१५	२८३
दूरं भूमौ निपततः	१२	२८१	नेरिः करणनेरिश्च	६	१३७
देवं गुरुम् ऋषिं	५	८७	पताकहस्तकाद्यन्यतमं	१३	३१८
देशी द्राविडदेशस्य	१५	३७२	पताकोऽधस्तलश्चान्यः	६	१३२
द्वितीयायां तृतीयायां	४	७३	पताकौ मणिवन्धस्थौ	५	१०६
द्वितीयोऽपि तदा	११	२७९	पताकौ स्वस्तिकौ	१४	३३८
द्वित्रिश्चतुःपञ्चधा तु	१६	३९७	पद्मवन्धमिति ख्यातं	९	१९८
द्वादशेति समाख्याता	६	१४०	पद्रागसमुद्दीप्तं तत्कथा	१५	३८९
द्वात्रिंशद्वा चतुःषष्टिः	२१	५४९	पदान्तरान्तरागा यद्	१८	४५९
दृष्ट्या च हास्यया	१४	३४०	पञ्चमीं दिशमासाद्य	४	८४
दृष्ट्या विधूतशिरसा	१४	३४७	पर्यायान्नर्तनं कुर्यात्	२०	५१३
धनुःकर्षं स्थितावर्त्तचायी	४	८०	परावृत्तेन मूर्ध्ना	१४	३४४
धरूणां ज्ञातयः	१७	४२२	परिभ्राम्यावनीं याति	१२	२८८
धरूपूर्वार्धके यत्र	१७	४४४	परिमण्डलितेनाथ	१३	३३०
धात्वादिरहितं गीतमालाप	१७	४२२	पलाशिगृध्रक्रीडाया	१०	२३३
ध्रुवाडाख्यं च तज्ज्ञेयं	८	१७८	पश्चात्क्षिप्तावुरःक्षेत्राद् यत्र	१०	२३०
नमनोन्नमनं तुङ्गमुर्ध्वाधः	१७	४३९	पश्चाद्गत्याथ तं हस्तं	१३	३२१
नम्रपृष्ठ लताहस्तौ	२१	५३३	पक्षिशार्दूलकं सिंहप्लुतकं	१०	२४२
नर्तको नर्तकी	२	६	पातयेच्चरणौ व्योम्नि	१२	२९५
नर्तनं तनुयान् पात्रं	१८	४५७	पादपार्श्वयुगे स्थित्वा	६	११६
नर्त्तनाभरणं तिर्यक्कृताण्डवं	१०	२४०	पादस्य निर्गमं	२	३०
नर्माङ्गं नर्त्तनं	१७	४३४	पादान्तानुप्रासयुतं	१८	४५३
नवभिः करणैरेभिः	७	१५४	पादाग्रतश्चरित्वा तु	६	१२५
नागवन्धं तदा प्रोक्तमन्यत्	९	२०५	पादाभ्यां दर्शयेत्	१३	३२४
नानागतिलसद्भावं लसल्लास्याङ्ग	१८	४५८	पारसीकैः पण्डितैस्तूद्	२१	५४३

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पार्श्वद्वन्द्वं सुलुनामा ३ ३७
पार्श्वरेचितकं तत्र ४ ६७
पार्श्वयोरुभयोस्तद्वद्घातभेदैः २२५ ५६
पार्श्वोर्ध्वजानुनी दण्डपक्षं ७ १५१
पार्श्वयोरुभयोस्तद्वत्क्रियया ६ ११५
पार्श्वयोरुभयोस्तद्वद् २२ ५५६
पार्ष्णिरेचितिका चारी ९ २२३
पिडिवाटः शिरिपिडी १६ ४१०
पिल्मिरूकैमिरूरम्यकलासैरिति १६ ३९१
पुनर्मुड्डपमानृत्येच्चेत् २० ५१७
पुनः कलासशब्देन १७ ४३६
पुनः पूर्वार्धकं १७ ४४५
पुनः शब्देन तदनु १४ ३५४
पुरतस्त्रिपदीं गच्छेन्नटवर्यो ३ ३४
पुरतोऽपिहितौ पादौ १२ २८६
पुरः प्रसार्य चरणं १२ २८४
पुष्पाञ्जलिं दर्शयित्वा ५ ९१
पूर्वं पूर्वं परित्यज्य ८ १८३
पूर्ववद्वर्णसंघातं तालधारिणि १४ ३६०
पूर्वोक्तमोक्षणं यत्र १३ २५५
प्रतितालं क्रमान्न्यस्य नटो ९ २०४
प्रतिदिक्स्थानकं तुल्यं तत् ९ २२०
प्रतिपादं यत्र बद्धमेवं १८ ४५४
प्रनृत्यन्ति समादाय २१ ५४८
प्रभुनामाङ्कितं द्वित्रिविरामाढ्यं १५ ३८०
प्रयोजिते तदा ताला ८ १९१
प्रसार्य जङ्घिकां २० ५२०
पृष्ठाग्रसारिताभ्यां चेत् २० ५०९
पृष्ठे गुरुः २ २६
वर्हिवर्हकलाकारौ करौ ५ ११०
वहुभिर्वाहुभेदैश्च सालपल्लव २० ५०६
ब्रह्माख्यस्थानकेनापि धीमान् १३ ३३४
बाह्यभ्रमरिका पश्चाद् ११ २५२
बाह्यभ्रमरिका यत्र ११ २५६
बाह्यभ्रमरिकां बद्ध्वा ७ १४७
बाह्यभ्रमरिकारायरंगाल्लुहोर्मयी ११ २५८
बाह्यभ्रमरिनिःशङ्कौ ११ २५४
बाह्यान्तस्तिरपच्छत्रयक्राद्या १२ ३०४
भवतां भूतये ५ ९३
भवेद् द्विशिखरत्वं ३ ४१
भानोर्गतिरिवालक्ष्ये हस्ताभ्यां ५ ११२
भावहावविलासैश्च १६ ४०५
भावहावसुलास्याङ्गनर्तनं १७ ४२७
भुजंगत्रासितामोक्षे तद् ध्रुवाडः १० २३६
भूमावेकं समास्थाय १२ २९४
भूमेरूर्ध्वस्थितिः ३ ४४
भ्रामयित्वा पतेद् ११ २७७
मण्डलभ्रमितौ श्लिष्टौ ५ १०७
मण्डलं स्थानकं तत्र ४ ६३
मणिवन्धयुतौ हस्तौ १९ ४९२
मत्तकुक्कुटवद् यत्र ६ १२३
मध्ये च स्थीयते ६ ११७
मंडलस्थानकं कृत्वा ४ ६८
मन्दानिलचलद्दीपशिखेवाङ्गस्य ३ ३८
मन्मथोद्दीपना दृष्टिः ६ १२१
मुरजादिषु वाद्येषु २१ ५४६
मरालगतिका यत्र मध्ये ७ १६६
मरालीं च पुरस्कृत्वा ६ १२०
महीतले यदासीनो १२ २९७
मातृकामुनिनागांश्च २ ७
मायूरीं भानवीं ५ १०३
मुख्या तु कद्दडिधरु १६ ४१७
मुखचालिरिति प्रोक्ता २ २२
मुखचालिश्चोरुपाणि ध्रुवाडा २ १६
मुखं तु पूर्वरङ्गः २ २१
मुड्डपस्थो नटो यत्र २० ५१६
मेलापकान्तराभोगसमस्त १६ ३९६
मेलापकं वादयेयुः २ ४
यतितालयस्थानचारीहस्तात्मकं ६ १३५
यतिलग्नः समुत्पाद्यः १० २३२
यतः पादस्ततो २ २९
यत्र किङ्किणिकावाद्यैराहति १६ ४०९
यत्र चेष्टाविरहितं २१ ५४२

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

यत्र तत् प्रसरं प्रोक्तं	९	२२४
यत्र तालयुजा	१४	३५१
यत्र पाटक्षरालापस्ततो	१५	३८८
यत्र स्वस्तिकमावर्त्य	१२	२८२
यत्राङ्गं मोटयेत् तिर्यग्	१९	४९६
यत्रानेकस्थितिः क्रीडा	७	१५७
यत्रोद्ग्राहध्रुवपदो बद्धो	१५	३७७
यत्रोद्ग्राहं च मेलापं सकृद्	१५	३७९
यथाक्रमेण सप्तभ्यामष्टभ्यां	४	७५
यथाभिनयसंपन्नं विचित्र	१८	४७४
यदा तु मकरो	५	१०८
यदा प्रागुक्तमोक्षः स्यात्	१०	२४९
यदा मुडुपचारीभिर्नृत्ये	२०	५१३
यदि प्रयोगो मेलापे	१६	३९८
यदोत्प्लुत्योक्तमोक्षश्चेत्	१०	२४५
यदोल्लासलसद्गात्र	१४	३५६
यस्य गीतस्य यो	१३	३२७
यावनीभाषया युक्तं	२१	५३७
युक्तायुक्तैर्नृत्तहस्तैः	१९	४८६
युगपत् स्फुरणात्	५	१२२
येन येनेह गीतेन	१४	३६१
रङ्गातालः सुयतिवान्	८	१७२
रङ्गं प्रविश्य	१७	४२०
रङ्गपीठस्य मध्ये	२	२७
रङ्गमध्यमनुप्राप्य चार्या	५	८८
रञ्जकाय वदेत्	२	३२
रथचक्रैकपादेन परेण	७	१४२
रसभावाङ्गदृष्ट्याद्यैर्भावनेरिः	१९	४८८
रागालापानुगां	३	४८
रायरङ्गालुरुक्तान्त्यस्ततत्	११	२५७
रायरङ्गालुरुक्तान्यो	११	२६३
रेखा सौष्ठवलास्याङ्गैः	१६	४०४
रेखा सौष्ठवसंपन्नः स	७	१४५
लङ्घयेदङ्घ्रिणान्येन प्रोक्ता	१२	२८३
लयतालविचित्राङ्गैर्यतिनृत्तं	१९	४७९
ललाटतिलकं पश्चात्	७	१५३
लोकवृत्त्यानुसारेण ज्ञातव्यास्ते	१२	३०२
वपुः पुनः पुनर्यत्र	१९	५००
वादीशगजभैरूडे होर्मयी	११	२६१
वादीशगजभैरूडं	१०	२४१
वाद्यानां नादसाम्यं	२	३
वानरक्रीडिताकारं तलसञ्चेन	९	२१५
वामावर्तं भ्रमेद्	१२	३०६
वामावर्त्तं भ्रमेदाहुस्तां	१३	३१०
वामो यथास्थितः	४	६९
विचित्रगतिसंपन्नं	१९	४८२
विचित्रचरणं साक्षाद्राग	१७	४२४
विचित्रचतुरो हस्तो	८	१७३
विचित्रभ्रमरो बालक्रीडासाधन	८	१६८
विधाय नर्तनं	१७	४३७
विदध्यान्नर्तनं नानालयत्रय	२१	५३७
विदध्यान्नर्तनं सम्यक्	१९	४९२
विद्युत्क्रान्तं ततश्चन्द्रवर्तनामनि	७	१५२
विद्युद्विलासितं:वात्यावर्तितं	१०	२३९
विरामसाम्यगतिभिर्लयैर्नाना	१९	४७६
विलम्बितोच्चारमानं	१७	४२८
विलम्बितैकताली च	९	२२२
वैष्णवं च हयक्रान्तं	६	१३०
वैशाखमण्डलालीढप्रत्यालीढ	१६	४०३
वैशाखरेचितं तत्र बाहू	४	६१
व्यावर्तनाद् बहिश्चान्तस्तदा	५	१०९
व्यावर्तयेत् तमेवाङ्घ्रिं	१३	३२२
व्यावर्तितौ लताहस्तौ	३	४०
व्योम्नि निःशंकदिङ्भ्यां	१२	२८९
शनैरुच्चालितौ पादौ	५	१११
शब्देन तेनकैशब्दखण्डेन	१४	३५३
शिरोहकरपादानां युगपद्	३	५२
शास्त्रसङ्गकथावृत्तिश्चेत्	१६	३९२
शिरितिरः खलुखलुश्चेति	१६	४११
शुकतुण्डेन हस्तेन	१४	३३५
शुद्धचालि च तव	४	८५
शैवाख्यस्थानकेनापि	१४	३३९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शोभितं यत्र दिग्भावैश्चित्रं ७ १६४
शृङ्गाररसभावाढ्यं रागताल १८ ४५२
श्रीरङ्गाद्या विप्रकीर्णास्तथा १५ ३६८
षड्गादन्यतमः सोऽत्राभिनेयो १३ ३२८
षड्भिरङ्गैश्चतुर्भिर्वा ८ १८१
षष्ठो दिशं ४ ८१
स एव द्रुतमानेन १९ ४८८
सङ्कीर्णनेरिर्भावादिर्नेरिश्च १८ ४६७
सप्तसप्तकराक्रान्तस्थानं २ ११
सप्तमीं दिशमासाद्य ४ ७२
समतालप्रयोगेण यतिभेदेन ७ १६७
सबालमकरा लास्यश्चारी ७ १५८
सभासंमुखतो हस्तौ ४ ६६
समत्रिभागलान्तानां प्रत्येकं ९ २०१
समद्विभागलान्तानां प्रत्येकं ८ १८८
समपादेन च स्थित्वा ६ १२६
समपादे स्थितं २१ ५२९
समस्तैरथवा व्यस्तैस्तत् १४ ३५०
समानमात्रलान्तैश्च ८ १८२
समां कृत्वा समनखं ४ ६०
समुच्चरति षड्गादिमगणादि १३ ३१५
समौ पादौ यदान्यस्मिन् १२ २९२
सर्वे घर्घरभेदास्ते १६ ४१३
सविलासं मन्दमन्दं ३ ३६
सव्यापसव्यतः पश्चाद् ५ ९०
सव्यापसव्ययोरूर्ध्वक्रियया ५ ११३
सव्यापसव्ययोस्तत्र वसुताला ९ १९७
सव्यापसव्ययोर्यत्र १९ ४९३
सव्यापसव्ययोर्हस्तपादयोः ९ २१०
सशब्दघातभेदैश्च पुरतः २२ ५५७
सशब्दा च क्रिया २१ ५४१
सक्षिप्रगजलीलाश्च वर्तना ९ २१९
सा एवायुतसंयुक्तहस्तैः १९ ४८४
सा पट्टिः कथिता १७ ४३०
सा धरू कथिता धीरैः १६ ४१६
सार्थाङ्गं नृत्यवन्नृत्येन्निरर्थाङ्गं १५ ३७०
सूलुपूर्वं यदोत्प्लुत्य १२ २८०
सूलुं बद्ध्वा ११ २७६
सूलुं बद्ध्वैकपादेन ११ २७८
सूलुचालनकं तत्र ३ ५५
सूलुपूर्वं तदा ११ २८५
संकीर्णानेकगतिभिः प्रवृत्तं ८ १७७
संकीर्णानेकगतिभिः प्रवृत्तं २० ५०३
संप्रदायानुसरणं चिन्दुनृत्यं १६ ४०८
संहतात्पुरमुत्प्लुत्य १२ २९६
स्तम्भक्रीडनिका चारी मध्ये १० २३१
स्थितिर्यथेप्सिता तद्दिग्रञ्जकं ८ १६९
स्थितिदिग्भेदतो विद्युद्गतिवत् १० २२८
स्थानकेन विनिर्दिष्टो १४ ३४५
स्थापयेत् पूर्वपूर्वार्धं ९ २०८
स्थाप्यादिवर्णानङ्केन भावान् १५ ३६३
स्यन्द्यपस्यन्दिताध्यर्धिस्थिता १६ ४०२
स्यादक्षिभ्रूविकारादि १८ ४६३
स्वरमन्द्राद्यो गीतप्रबन्धा २ १८
स्वरमञ्चकनृत्यं १४ ३५७
स्वस्थाने च तृतीये च ९ २०३
स्वसव्यक्रमतो नृत्वा २ २४
स्वर्णादिधातुबद्धान्तौ सरलौ २१ ५५२
हस्तबाह्वङ्घ्रिभिः ८ १८०
हस्तेन करिहस्तेन १४ ३४६
हस्तयोः पादयोस्त ९ २०९
हस्तैरभिनयेदर्थान् १५ ३६४
हंसपक्षकरो यत्र ९ २१३
हंसास्याभिधहस्तेन १३ ३३२
हंसीं च कुक्कुटीं ५ १०४
हावभावादिसुलयतालादिगति १४ ३५५
होर्भयीकर्त्तरीपूर्वं कार्तरी १२ २९९
होर्भयी चोक्तमुक्तिः ११ २६७
ह्रदान्तःस्थितपाठीनो ६ ११४

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पारिभाषिकाणां शब्दानामनुक्रमणी ।

	पङ्क्त्यङ्क	पृष्ठाङ्क
अग्रतलसञ्चर	५०	३
अञ्जन	३१	२
अङ्गीकृत	९७	५
अञ्जलिकर	८६	४
अडालु	२५७, २५९, २६४, २७२, २७७	११
अदृष्टपृष्ठतुल्ल	१३८, १७४, १७५	६, ८
अर्द्दिक	४१९	१७
अधस्तल	१३२	६
अधोमुख	९६ ३३६	५, १४
अनिवद्‌ध	५३६	२१
अनिवन्ध	१३	२
अनिवन्धनृत्त	५६३	२२
अपस्यन्दित	४०२	१६
अभिनेय	३२८	१३
अर्धचन्द्र	३३३, ५२९	१३, २१
अर्धरेचित	८३	४
अलगंढ	२७४	११
अलपद्म	३२९	१७
अलपल्लव	९५, ९९, १५०, ३४१, ५०८	५, ७, १४, २०
अश्वक्रान्ता	३३६	१४
अहिफणाकार	४०	३
आलाप	४२०	१७
आलीढ	१५५, ४०३	७, १६
आवर्त्तचारी	८०	४
आविद्ध	३३, ७६ २२२, २२९	३, ४ ९
आहति	४०९	१६

	पङ्क्त्यङ्क	पृष्ठाङ्क
इङ्गन	३१	२
उक्तमुक्तिः	२५१	१०
उत्कटस्थ	४९९	१९
उत्सव	५४७	२१
उद्ग्राह	४४०, ४५५, ५४३	१७, १८, २१
उद्वेष्टित	६५, ९६	४, ५
उरुप	१३६, १४६	६, ७
उरुपाणि	१६, २३४	२, १०
उरुवेणी	२२६	१०
उरोवर्त्तित	२२७	१०
उर्ध्वसञ्च	४१, ५९	३, ४
ऋषि	८७	५
कटिस्थ	३३३	१३
कटीच्छिन्न	३३९	१४
कमल	४७०	१८
कमलवर्त्तनि	१०२, १०७	५
कर	७०	४
करण	७८, १५४, ५२५, ५२६	४, ७, २०
करणनेरि	१३७, १४८, १५६	६, ७
करणपूर्वक(नेरि)	१५५	७
कराङ्घ्रि	२०२	९
करिहस्त(क)	६४, १७१, ३४६	४, ८, १४
करुणा(दृष्टि	३३५	१३
कर्णाट(भाषा)	४२९	१७
कर्तरी	१३९, २२८, २२९	६, १०
कट्टडि	४३८	१७

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कट्टडिधरू	४१७, ४१८, ४४३	१६, १७
कलविंक	२३८, २४५	१०
कलास	३९१	१६
कलासत	४३१	१७
कलासशब्द	४३६	१७
कल्लादि	५३८	२१
काङ्गूल	३४३	१४
कातरा	८७	५
किङ्किणिकावाद्य	४०९	१६
कुक्कुटासन	२९१, २९७	१२
कुक्कुटी	१०४	५
कुडुक्क	६	२
कुडुप	४७१	१८
कुरङ्गी	११८	६
कुलीरिका	६२, २१३	४, ९
कैमिरू	३९१	१६
कैमुरू	४२५, ४३२	१७
कैवर्तन	४६९, ४९४, ४९५	१८, १९
कोलचारिक(?)	३७४, ३९३	१५, १६
कोलचारीचिन्दु	३९४	१६
कौक्कुटी	८५, १२३	४, ६
क्रम	२२०, ४१८	९, ६
क्रीडा	१५७	७
खञ्जनी (गति)	१०४, १२५	५, ६
खटका	७९	४
गज	२४१, २६१	१०, ११
गजगामिनी	१०४	५
गजर	४	२
गजलीला	१२७	६
गणेश	८	२
गति	४९, १२८, १४३, १७१, २२६, २३२, २३५, ४७८, ४८२, ४९३, ५०३, ५१६, ५३४	३, ६, ७, ८, १०, १४, १९, २०, २१

ग्रहस्वर	३२७	१३
गान्धार	३३७	१४
गीत	१८, ३२७, ३५९, ३६१, ४२२, ५३७, ५४४, ५६०	२, १३, १४, १७, २१, २२
गीतनृत्त	३६६, ३७१	१५
गीतपद्धति	११८	६
गीतमुद्रा चिन्दु)	३७५, ३९५, ४०१	१५, १६
गीर्वाण (भाषा)	४५०	१८
गुण्डाल	४७०, ५०६, ५०७	१८, २०
गुरु	८७	५
गोपुच्छ	१५७	७
घर्घर	३०९, ४११, ४१२, ४१३, ४३५	१६, १७
घर्घरी	५२३	२०
चक्र	३०४, ३११	१२
चक्रबन्ध	१८६, १९२	८, ९
चक्रभ्रमरि (का)	२४४, २४६, २४८, २५०, ३११	१०, १३
चट्टु	५३४, ५३५	२१
चट्टुक	४७१	१८
चतुर	३२९	१३
चतुरस्र	५६, ५७, ८२, १४१, १४७, ३१६	३, ४, ७, १३
चन्द्र	२३, ३५	२, ३
चन्द्रवर्त	१५२	७
चरण	३२०	१३
चामर	५५४	२१
चारी	३३, ५०, ५८, ७१, ७६, ८३, ८७, ८८, १३५, २२३, २३१, ३३७, ५५९	३, ४, ५, ६, ९, १४, २२
चारुपाट	४०६	१६
चालन	३६, ३९, ६०, ८१	३, ४

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चालि १७ २
चित्र १३७, १६४, १६५, ६,७,१२,
२९३, ४३२, ५५९ १७, २२
चित्रकलास(क) १३३ ६
चित्रित ५५३ २१
चिन्दु(क) १८, ३७२, ३७४, २, १५,
३७५, ३९०, ३९३, १६
३९५, ३९७, ४०८,
४१४
छत्रभ्रमरि (का) १४८, ३०४, ७, १२,
३१० १३
छुरिका ५५५ २१
जक्कडी ५४२, ५४४, २१
५५२
जलकीट २२० ९
जानुकुञ्चितक ६७ ४
जारमान २१५ ९
झंपाताल १५० ७
डांडु(क) २४४, २४६, १०,
२४८, २५०, २५२, ११,
२५५, २६०, २६२, १२
२६४, २६६, २७३,
२८५, २८६
डिट्टु २९९ १२
ढेंकि २९३ १२
तण्डु ८ २
तन्त्री ४३३ १७
तलपुष्पपुट ८९ ५
तलमध्य ४० ३
तलमुख ७१ ४
तलविलासित १५१ ७
तलसञ्च २१५ ९
ताण्डव २४० १०
तान ३५९ १४
तार्क्ष्य २३८ १०
तार्क्ष्यपक्ष २४७ १०
ताल ३२, ४७, १३५, १४१, २,३,६,
१६३, १७६, १७८, १८१, ९, १३,
१८४, १८७, १९१, १९४, १४,१७,
२००, २११, ३२४, ३५५, १८,१९,
३६०, ४२१, ४३३, ४३५, २०,२२
४४६, ४४८, ४५२, ४७५,
४७९, ४८१, ५०६, ५६०
तालग्रह ३६५ १५
तालधारिणी ३१४ १३
तालयुजा ३५१ १४
तालरूपक ५०३, ५०४ २०
तिरप ३०४ १२
तिरपभ्रमरी २६०, २६२, २६४, ११,१३
२६६, ३०८
तिरुवणि ३७४, ३८४ १५
तिरुवणिचिन्दु ३८५ १५
तिर्यक्करण ५२८ २०
तिर्यङ्मुखा ८३, १६१ ४, ७
त्रिपताक ९८, १२४, १६२ ५,६,७
त्रिविक्रम ३०९ १३
त्रिसञ्च १५९, १६३ ७
तीवटि ४७५ १९
तुल्ल १३९ ६
तुल्ले २१८, २२१ ९
तैलङ्ग(देश) ४३८ १७
तैलङ्ग(भाषा) ४१५ १६
तोलरूप १३८ ६
दण्ड(क) ५५०, ५५४, २१,२२
५५५, ५६२
दण्डपक्ष १५१ ७
दण्डरास ५६१ २२
दलरूपि २०० ९
द्राविड(देश) ३७२ १५
द्राविड(भाषा) ३७६ १५
दिक्स्थान ३४९ १४
दिंडिक २७५, २८८, २८९ ११,१२

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

द्विशिखर	४२	३
दृष्टकपृष्ठक	१४६	७
दैव	८७	५
द्रुत	१८२, ४३१, ४४८,	८,१७,
	४९०, ४९९ ५०२,	१८,१९,
	५०५	२०
धनुःकर्ष	८०	४
धरू	१९, ४१६,	२, १६,
	४२६, ४४४	१७
धरूकट्टडि	४४२, ४३	१७
धरूनृत्य	४४९	१८
धीर	३४०	१४
धुत	३४१	१४
धुवाड(डा)	१६, १७९, २३६,	२, १०,
	२३७, २६८	११, ८
ध्रुव(क)	३५३, ३९८, ४००	१६, १४
ध्रुवपद	१९, ४६५, ४७६,	२, १५,
	४५५, ४५६, ४६२	१८
ध्रुवहास्य	५४१	२१
धैवत	३४५	१४
ध्वनिपेशल	४३५	१७
नटी	४२७	१७
नडनेरि	४६८, ४९०, ४९१	१८, १९
नतजानु	५११, ५१२	२०
नत्रक	१३७, १६८,	६,
	१६९, १७०	८
नर्तन	४२०, ४२७, ४३२,	१७,
	४३४, ५३९	२१
नर्तनाभरण	२४०, २५५	१०, ११
नम्रपृष्ठ	५३३	२१
नाग	७	२
नागबन्ध	२०५, २०६	९
नान्दी	९२	५
नामावली	४६७, ४७६, ४७७	१८, १९
निबन्धक	१३	२
निबन्धनृत्य	४६५	१८

निषाद	३४७	१४
निःशङ्क	२४७, २४८, २५०,	१०,
	२५३, २५४, २६५,	११,
	२७२, २८१, २८९	१२
नेरि	१३७, १४५, १४९,	६, ७,
	१५५, ४६७, ४६८,	१८,
	४८२, ४८३, ४८६	१९
नृत्त	१३, ४७६, ५४२	२, १९,
		२१
नृत्तहस्त	४८६	१९
नृत्ततत्त्वज्ञ	७४	४
नृत्तज्ञ	२२	२
नृत्य	३२६, ३५१, ३६२,	१३,१४,
	४३८, ४४५	१७
न्यास	४३७	१७
पटव	४१०	१६
पट्टि	४२६, ४३०	१७
पण्डित	५४३	२१
पताक	९५, १०६, १३२,	५, ६,
	३१८, ३३८	१३, १४
पताकहस्त	१४३	७
पद्मकोश	२१९	९
पद्मबन्ध	१९८, ९९,	९
	२०५, २०७	
पर	१४२	७
परावृत्त	३४४	१४
परिमण्डलित	३३०	१३
पलाशिगृध्र	२३३	१०
पल्लव	३४१	१४
पक्षिशार्दूल	२४२, २६५	१०, ११
पक्षिसालु	२७३, २८९	११, १२
पाट(तः)	८५, ४२१	४, १७
पारसीक	५४३	२१
पार्ष्णिरेचित	२२३	९
पार्श्वरेचित	६७	४
पिडिवाट	४१०	१६

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पिल्मिरु-रू	३९१, ४४४; ४२५	१६, १७
पिहित	२८६	१२
पुरण्डरी	४७०	१८
प्रतिताल	२०४	९
प्रतिपाद	४५४	१८
प्रत्यालीढ	८१, १३०, ४०३, ३४४	४, ६, १६
प्रबन्ध	४	२
प्रसर	१३९, २२४, २२५	६, ९
पृष्ठतुल्ल	१३८	६
बद्ध	३७६	१५
बन्धक	१३, १४, २०	२
बाल	१५८	७
बाह्यभ्रमरि	२५४	११
विडुलागव	१६, २७१, ३०१, ३०३	२, ११, १२
बिन्दुचिन्दु	३७३, ३८१, ३८२	१५
वीभत्स	३४३	१४
वीसं	२९५	१२
ब्रह्मा	३३४	१३
भरत	८	२
भानवीगति	११३	५
भाव	३१७, ३२३, ३५५, ३६३, ४०५, ४२७, ४५६, ४६४, ४६८, ४८८	१३, १४, १५, १६, १७, १८, १९
भावनेरि	४८८, ४८९	१९
भावाढ्य	४५२	१८
भित्र	१५७, १५९	७
भुजङ्ग	२३६	१०
भैरूड	२६१	१०, ११
भ्रमण	५३३	२१
भ्रमरी	२३५, २५०, २५६, २६०, २६२, ३०६; ३१२, ३१३, ५१८, ५२५, ५४०, ५५९	१०, ११, १२, १३, २०, २१, २२
भ्रमरिका	२३७, २४८, २५२, २५८, ३०४, ३०६, ३०७	१०, ११, १२, १३
मकर	१०८	५
मकरवर्तन	१०१, १०९	५
मणिबन्ध	१०६, ४९२	५, १९
मण्डी	४४०, ५१३, ५१४	१८, २०
मण्डप	१०	२
मण्डल	६३, ७७, ४०३	४, १६
मण्डलभ्रमित	१०७	५
मण्डलस्थान	६८	४
मण्डलाकृति	११२, ५३२	५, २१
मण्डली	५६०	२२
मत्तकुक्कुट	१२२	६
मध्यदेशी	४५०	१८
मध्यमस्वर	३४०	१४
मयूरललित	३३०	१३
मराल	७६	४
मरालगति	१६६	७
मराली	१२०	६
मसृण	५५३	२१
मातृका	७	२
मान	४३१	१७
मायूरी	१११	५
माला	३७४	१५
मालाचिन्दु	३८६, ३८७	१५
मित्र	१३७, १५९, १६०	६, ७
मुक्तधरू	४१७	१६
मुक्तिकाधरू	४४८, ४९१	१८
मुक्ति	२६७, ३९९	११, १६
मुखचालि	१६, २२, १३४	२, ६
मुंगर	२९७	१२
मुंगरणं	२७४	११
मुड्ड	५१८	२०
मुड्डप	४७०, ५१५, ५१६, ५१७, ५१९	१८, २०

मुद्रा	३७५ ३९५, ४०१	१५, १६
मुनि	७	२
मुरज	५४६	२१
मुरण्डरी	४१९, ४२०	२०
मुरू	४९७, ४९८	१९
मुरूक	५००	१९
मुरूरट्ट	४६९	१८
मुष्टि	७९	४
मेलन	४३३	१७
मेलाप	३७७, ३७९,	१५,
	३९६, ३९८	१६
मेलापक	४	२
मैनवीगति	११५	६
मोक्ष	२४९, २५३, २५९,	१०,११,
	२६५, ४००	१६
मोक्षक	२६१	११
मोक्षण	१३०, २५५	६, ११
मृदङ्ग	४३३	१७
यति	१३५, १६७, १७२,	६, ७,
	२३२, ३५१, ३५४,	८, १०,
	४२८, ४६७, ४७९,	१४,१७,
	४८०	१८, १९
यमक	४५३	१८
यवन	५४४	२१
यक्ष	७, २३८	२, १०
यावनीभाषा	५३७	२१
रङ्ग	११, १२,	२,
	२१, ४२०	१७
रङ्गपीठ	९, २६, २७	२, ५
रङ्गभूषण	२४०, २५९	१०, ११
रङ्गमध्य	२८, ६५, ७५, ८८	२,४,५,
रङ्गालु	२७९	११
रट्ट	५००	१९
रट्टमूरू	५०१	१९
रथचक्र	१४२	७
रवि	२३९	१०
रविचक्र	१९८, १९२, १९३. १९४	८, ९
रविसञ्चर	२५३	११
रस	४८८	१९
राग	४८, ९२	३, ५
रागमूर्ति	४२४	१७
राय	२७३, २८९	११, १२
रायरङ्गालु	२५७, २५८, २६३,	११
	२६६, २७२	
रास	१४१	७
रिषभ	३३४	१३
रेखा	४०४, ४६१	१६, १८
रेचन	५२	३
रोलंबांग	२४१. २६३	१०, ११
लगर्दिङ्क	३००	१२
लगपाटक	४१०	१६
लताकर	६९, २३	४, १०
लतावृश्चिक	१५३	७
लताहस्त	४०, ६८, ५३३	३,४,२१
लय	३२ १३५, १४१,	२,६,७,
	३२४, ३५५, ४२१,	१३,१४,
	४४६, ४४८, ४७५,	१७,१८,
	४७९, ४८१, ५३९,	१९,२१,
	५६०	२२
ललाटतिलक	१५३	७
लक्ष्मी	८	२
लावणी	५३०, ५३१, ४७१	१८, २१
लास्य	१५८, ४२३, ४२७	७, १७
लास्याङ्ग	४०४, ४५९	१६, १८
वक्त्र	७६	४
वक्त्रहस्त	३३	३
वर्णक	५५३	२१
वर्तना	२१९	९
वसन्त	५४७	२१
वसुताला	१९७	९
वाणी	८	२
वादक	५४६	२१

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वादी	२६१	११
वादीश	२४१	१०
वाद्य	५४६	२१
वानरक्रीडिता	२१५	९
विचित्रगति	४८२	१९
विद्युत्	२२८, २३९	१०
विधूत	३३८, ३४७	१४
विप्रकीर्ण	८२	४
विराम	४७८	१९
विलम्बित	४२८, ४८१	१७, १९
विलास	४०५	१६
विष्णु	९	२
विक्षिप्त	४९६	१९
वैशाख	६१, ४०३	४, १६
वैष्णव	१३०	६
वृक्षबन्ध	२११	९
वृक्षबन्धताल	२१२	९
शब्द	३५२, ३५३, ५४१	१४, २१
शब्दचालि	१७	२
शब्दनृत्य	३२५, ३२६	१३
शास्त्र	३९२	१६
शिखर	३१६	१३
शिखरहस्त	१३१	६
शिरितिर	४११	१६
शिरिपिडी	४१०	१६
शुकतुण्ड	३३५	१४
शुद्धचालि	८५	४
शुद्धचिन्दु(क)	३७३, ३७७, ३७८	१५
शैवाख्य	३३९	१४
श्रीरङ्ग	३६८	१५
श्लिष्ट	१०७	५
शृङ्गार	४५२, ४६३	१८
सङ्कीर्ण	४६८, ४८६, ५०३	१८,१९, २०
सङ्कीर्णनेरि	४८७	१९
सञ्च	५९, १५९, १६३	४, ७
सम	१५७, २८०, ३२१, ३३३, ३५९, ३६५	७, १२, १३,१४, १५
समताल	१३७	७
समपाद	३३	३
सन्धी	५४९	२१
सव्यसूची	५०	३
सव्यहस्तिकर	६४	४
सक्षिप्रगजलीला	२१९	९
संप्रदाय	१०५, ४०८	५, १६
साचिमण्डल	१२१	६
सालगसूडक	३६८	१५
सालङ्गनेरि	४८४, ४८५	१९
सालङ्गपूर्वक	४६७	१८
सालपलुववर्तन	५०८	२०
सांप्रदायिक	२	१
सिंहप्लुत	२४२, २६७	१०, ११
सीलुक	१३८, २१५, २१७	६, ९
सुलु	३७, ३९, ५७, ६८, ७८, ८२, ८४, २२७, २३५, २६९, २७६, २७८, २८०, ४०५, ४२३, ४३५	२,३,४, १०,११, १२,१६, १७
सुलुप	४३४	१७
सुलूपूर्व	२८५	१२
सुलूवर्तन	४३, ६३	३, ४
सुलूचाल	५५	३
सूची	३२०	१३
सूच्यर्द्ध	३११	१३
सूच्यास्य	९७	५
सूडा	३६७	१५
सूर्यमण्डल	५३४	२१
सौष्ठव	४०४	१६
स्तम्भक्रीडनिका	२३१	१०
स्थान	६२, ६३, ७७, १३५	४, ६

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

स्यन्दि	४०२	१६	हाव	३५५, ४०५, ४२७,	१४,१६,
स्यन्दिता	४०२	१६		४५६ ४६४	१७, १८
स्वर	३२३, ३३७, ३४२,	१३,१४,	हास्य	३४०	१४
	३४८, ४३१	१७	हिंगर	२९८	१२
स्वरभाषा	५४३	२१	होर्मयी	२४६, २४८, २५०,	१०,
स्वरमञ्चक	३५७	१४		२५२, २५४, २५६,	११,
स्वरमञ्चनृत्य	३५८	१४		२५८, २६१, २६२,	१२
स्वराभिनय	३४९	१४		२६७, २७२, २८३,	
स्वस्तिक	५४, ५८, ७१,	३, ४,		२९९	
	१०६, २८२, ३०८,	५, १२,	होलुनाम	१३९	६
	३३८	१३, १४	होल्लु	२३३, २३४	१०
हयक्रान्त	१३०	६	हंसलील	२१३	९
हस्त	१३५, १५०, १७३,	६, ७,	हंसपक्ष	२१३	९
	२२२	८, ९	हंसास्य	९८, ३३२	५. १३
हारिणीगति	११९	६	हंसिनीगति	१२१	६

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

GLOSSARY

[N. B. As said in the introduction, only one Ms. was available for the edition of this text, and so many obscurities have remained in it. Some of the terms which are probably Non-Indo-Aryan were discussed by me with my friend, Shri Ramanujacharya, who is a good scholar of the Southern dancing traditions. He was kind enough to explain some of these terms for which I express my thanks to him].

शब्दचालि – Cārī movement with Śabdas (sounds).

बिडुलागव – One type of utplavana (jumping).

चिन्दु – a type of dance in South India.

घरू – Śabdam.

पट्टि – a kind of dance.

सुलू – a particular position in Dance.

सारी – Lāsya type of Kathakalī.

नेरी – a fundamental dance of Tāndava type.

भित्र – a fundamental dance of Lāsya type.

चित्र – a dance pose with Bhāva gīta.

नत्रक – Gatibhedam–a kind of dance.

तुल्ल – Talasañcara Sthānakam.

सीलुक – Vānarakriḍītam–an aṅgahāra pose.

होलू – Gṛdhralinaka–an añgahāra pose.

भ्रुवाडा – pose in Bhramaṇas.

चक्रबन्ध – Bandhana used in the abhinaya of Śṛngāra.

पिल्लिमरू – flute (musical instrument).

दिंडिक – an instrument.

दिंडु – a sound from Diṇḍika.

चिन्दु – Dravidan dance ascribed to gods or goddesses in Daśarā.

शुद्धचिन्दु – a dance without melapāni.

विन्दु चिन्दु – Dance with melapāni.

तिरुवणीचिन्दु – Dravidian śabdas ascribed to some king.

कलास – the last tāla in the series of Tālas.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

Some parallel verses occuring in Bharatārṇavam•–an unpublished work attributed to Nāndikes'vara.

अ. ३. नृत्याध्याय--

सशब्दा च क्रिया यत्र ध्रुवशं यादि भेदतः ।
यत्र चेष्टा विरहितं तन्नृत्यं जक्कडी मतम् ॥

(Compare नृत्तसंग्रह Page 21, V. 3)

तालग्रहानङ्घ्रिपदैः समादिश्य यथोचितम् ।
अनेनैव प्रकरेण गीतनृत्यं समाचरेत् ॥

(Compare नृत्तसंग्रह Page 15 V. 4)

पादाभ्यां दर्शयेत् तालं लयाच्छब्दाक्षराण्यलम् ।
नृत्येत् तदा शब्दनृत्तं नृत्तवद्भिरुदीरितम् ॥

(Compare नृत्तसंग्रह Page 13 V. 6)

समपादे स्थितं पात्रं कटिन्यस्तार्धचन्द्रकम् ।
कटेरुपरि तत्कायं भ्रामयेल्लावणी तदा ॥

(Compare नृत्तसंग्रह Page 21. V. 1)

मुरजादिषु वाद्येषु वाद्यमानेषु वादकैः ।
कुतूहलाय भूपानां वसन्ताद्युत्सवेषु चेत् ॥

(Compare नृत्तसंग्रह Page 21. V. 1)

Comparable verses from the Bharatakośa*

अडालहुरुमयी – स्थललागनृत्तम्--

अडालाद्या हुरुमयी वामपादेन भूतले ।
यदा तिष्ठेन्निगदिता गणने तण्डुना तदा ॥ वेदः

(See Bharatakośa P. 9. and
Nṛttasamgraha अडाल्लुर्होमेयी P. 11)

करणनेरिः – देशीनृत्तम्--

सिंहाकर्षं चावहित्थं निवेशं चैलकादिके ।
क्रीडितं च तुरीयं स्याज्जनितं पञ्चमं तथा ।
षष्ठं चोपसृतं प्रोक्तं तलसंघट्टितं ततः ।
उद्वृत्तं चाष्टमं प्रोक्तं विष्णुक्रान्तं च लोलितम् ।
मदस्खलितसंभ्रान्ते विस्रम्भोद्घट्टिते ततः ।
प्रान्ते तलविलासं च प्रोक्तं पञ्चदशाभिधम् ।
रासतालेन मानेन मध्यमेन मनोरमः । वेदः ।

• I am indebted to Sri Rāmānujāchārya for finding out these verses from the manuscript in his possession.

* Ramakrishna Kavi, M.A. T. T. D. Press, Tirupati, 1951.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

एतदन्यथोक्त देवेन्द्रेण, यथा--

करणैः पञ्चदशभिर्युक्तः करणनेरिकः ।
सिंहाकर्षितमादौ स्यात्ततस्तलविलासितम् ।
वृश्चिकं च ततः प्रोक्तमन्यद्वृश्चिककुट्टितम् ।
लतावृश्चिकसंज्ञं स्याद्दण्डरेचितकं ततः ।
दण्डपक्षं चोर्ध्वजानु तलसंस्फोटिताभिधम् ।
विद्युद्भ्रान्तं दण्डपादं ललाटतिलकाभिधम् ।
एतानि द्वादशोक्तानि पूर्वेषां मततो यथा ।
जानुवेष्टनसंज्ञं च कराङ्घ्रिस्वस्तिकं तथा ।
अन्तश्छायाभिधं प्राहुस्त्रीणि पद्धतिकोविदाः । देवेन्द्रः ।

(See Bharatakośa P. 112 and
Nṛattasamgraha P. 7 Lines 150–155)

कलासः – देशीनृत्ताङ्गम्—

विविधैः पाटशब्दैश्चालङ्कृतं यतिमिश्रितम् ।
मध्ये पिल्लमुरूयुक्तं ग्रहश्चापि मनोहरम् ।
कलासरूपकं प्रोक्तं सङ्गीतज्ञैः पुरातनैः । वेदः ।

(See Bharatakośa P. 112 and
Nṛttasamgraha P. 16 Line 391)

कातरा – देशीचारी—

नन्द्यावर्तस्थितौ पादौ पश्चाच्चेदपसर्पतः ।
सा चारी कातरा प्रोक्ता देशीनृत्तविचक्षणैः । वेमः ।

(See Bharatakośa P. 126
Nṛttasamgraha P. 5 Line 87)

कुलीरिका – देशीचारी—

नन्द्यावर्ताभिधे स्थाने स्थितौ तिर्यक् प्रसर्पितौ ।
चरणौ यत्र तां चारीं कथयन्ति कुलीरिकाम् । वेमः ।

(See Bharatakośa P. 144 and
Nṛttasamgraha P. 4 Line 62)

चक्रबन्ध – काडनृत्तम्—

पिण्डः स्याच्चतुर्दशभिर्बिन्दुभिरथ ऊर्ध्वतः ।
दक्षहस्ते ब्रह्मतालो ईडावान् वामहस्तके ॥
दक्षाङ्घ्रौ सिंहलीलश्च वामाङ्घ्रौ यतिशेखरः ।
सकृद्रूपं ब्रह्मताले स्यादीडावान् द्विवारतः ॥
सिंहलीलो द्विवारं स्यादेकधा यतिशेखरः ।
अधश्चोर्ध्वं पिण्डबिन्दौ स्यात्समाङ्गेन योजनम् ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

एवं प्रथमखण्डः स्याद् द्वितीयमधुना ब्रुवे ।
इडावान् दक्षहस्ते च दक्षाङ्घ्रौ ब्रह्मतालकः ॥
वामाङ्घ्रौ सिंहलीलश्च तत्पाणौ यतिशेखरः ।
पूर्ववद्योजनं पिण्डं तृतीयं खण्डमुच्यते ॥
यतिशेखरतालस्तु दक्षपाणावलङ्कृतः ।
ईडावान् दक्षपादे च वामाङ्घ्रौ ब्रह्मतालतः ॥
वामहस्ते सिंहलीलः चतुर्थं रूपमुच्यते ।
दक्षपाणौ सिंहलीलो दक्षाङ्घ्रौ यतिशेखरः ॥
ईडावान् वामपादे च तत्पाणौ ब्रह्मतालकः ।
एवं चतुर्धा तालानां पिण्डे भवति योजनम् ।
चक्रबन्धेति विज्ञेयः काडस्तालविचक्षणैः ॥ वेदः ।

(See Bharatakośa P. 195 and
Nṛttasamgraha P. 8 Lines 180-185)

चित्रम् – करणम्–

पादेन भ्रमरीं कुर्वन् भ्रामयेच्चापि मध्यमम् ।
हस्तौ च भ्रामितौ स्यातां करणं चित्रसंज्ञकम् ॥ देवणः ।

चित्रम् – देशीनृत्तम् (उडुपाङ्गम्)––

चित्रं तत्साद्धर्धमानस्थानकेन गतिस्तथा ।
तिर्यङ्मुखा त्रिपताको मल्लिकामोदतालतः ॥
दक्षिणे च तथा वामे मकरौ हृदि चञ्चला ।
पूर्वमुक्ता गतिश्चान्ते तिरिपभ्रमरी भवेत् ।
तत्कराणं चमत्काराच्चित्रमित्यभिधीयते ॥ वेदः ।

(See Bharatakośa Pages 207-208 and
Nṛttasamgraha P. 7, Nines 160-165)

छत्रभ्रमरी – भ्रमरी–

स्थितैकेनाङ्घ्रिणा भूमौ दण्डवच्चोत्क्षिपेत् परम् ।
सव्यावर्तं भवेद्यत्र सा छत्रभ्रमरी मता ॥ कुम्भः ।

(See Bharatakośa Page 217 and
Nṛttasamgraha Page 12-13, Lines 304-310)

जकरी – देशीनृत्तम्–

यवन्या भाषया युक्तं यत्र गीतं सुनिश्चलम् ।
कौलादिगजरायुक्तं महाङ्गेन विभूषितम् ॥
विदध्यान्नर्तनं नानालयत्रयविचित्रितम् ।
कोमलाङ्गैर्यदा नृत्यं भ्रमर्यादिविराजितम् ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सशब्दादिक्रिया यत्र ध्रुवझम्पादिभेदतः ।
यत्र चेष्टाविरहितं तन्नृत्तं जक्करी मतम् ॥

पारसीकैः पण्डितैस्तु उद्ग्राहः स्वस्वभाषया ।
यद्गीतं जक्करीसंज्ञं यवनानामतिप्रियम् ॥ वेदः ।

(See Bharatakośa P. 222 and
Nṛttasamgraha P. 21)

जारमान – देशीनृत्तम् (उडुपाङ्गम्)-

उत्कटस्थानके तत्स्यात् खण्डसूच्यावर्नीव्रजेत् ।
आदितालेन वामोर्ध्वैत्रिपताकोऽथ दक्षिणः ॥

हस्तपार्श्वगतस्तिर्यक् त्रिपताकस्तथा त्विदम् ।
दक्षिणाङ्गे द्विवारं स्याच्चतुरश्रं ततः श्रयेत् ॥

सव्यवामपताकौ च स्वे स्वे पार्श्वे प्रसारयेत् ।
गृहीत्वा तिरिपं पश्चादेवमङ्गान्तरेण तु ॥

भवत्येवं सम्मुखं च सव्यास्यो दक्षिणां गतः ।
गृहीत्वा पूर्ववद्दक्षपादं वामस्तु संस्थितः ॥

तेनैवाङ्गेन तिरिपस्ततो वाममुखो भवेत् ।
ततः सम्मुखमास्थाय समसूच्यां पताकयोः ॥

प्रसारणं तु हृदये शिखरद्वयमाचरेत् ।
एवं द्विवारं कृत्वा च दक्षपादं निवेशयेत् ॥

उपरिष्टाद्वामजानोर्दक्षिणावर्ततो भ्रमेत् ।
मण्डिभ्रमरिका सा स्यादेवमङ्गान्तरे भवेत् ॥

ततो वामाङ्घ्रिसूचौ च वामपार्श्वे प्रसारयेत् ।
अलपद्मद्वयं दक्षपार्श्वतश्च प्रसारयेत् ॥

ततः सव्यपदे सूचौ सव्यपार्श्वे प्रसारयेत् ।
परिवृत्यालपद्मौ च वामपार्श्वे प्रसारयेत् ॥

अलपद्मस्वस्तिकं तद्विधाय वामपार्श्वतः ।
अलपद्मद्वयं दक्षपादसूच्या सहैव तु ॥

भ्रामयन्मण्डलाकारमुल्बणौ वामपार्श्वतः ।
कृत्वा दक्षिणसूच्याश्च वलनत्रयमाचरेत् ॥

ततः पताकप्रसरं सव्यं कृत्वा तकारणम् ।
हृदि वामं च शिखरं तदा स्याज्जारमानकम् ॥ वेदः ।

(See Bharatakośa P. 229 and
Nṛttasamgraha P. 9, Nine 115)

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ढेङ्की – धावनलागनृत्तम्-

वामः पुरोऽपरः पार्श्वे पादौ तालद्वयान्तरे ।
पताकौ प्रसृतौ तिर्यक् स्थित्वा स्थित्वा तु धावनम् ॥
कुट्टनं वामपादस्योत्प्लुतिं कृत्वा पदद्वये ।
विरलावूर्ध्वगौ पादौ दक्षिणेन पदा पतेत् ।
भूमौ यदा तदा ढेङ्की कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ वेदः ।

(See Bharatakośa P. 238 and
Nṛttasamgraha P. 12, Line 293)

ताण्डवं – नृत्तम्-

आसारितादिभिर्गीतैरुद्धतप्रायवर्तितैः ।
करणैरङ्गहारैश्च निवृत्तं विषमैरिह ।
ताण्डवं तण्डुना प्रोक्तं नृत्तं नृत्तविदो विदुः । कुम्भः ।

(See Bharatakośa P. 243 and
Nṛttasamgraha P. 10, Line 240)

तिरिपभ्रमरी – भ्रमरी--

अङ्घ्रिस्वस्तिकमादाय तिर्यग्भ्रमणतो भवेत् । कुम्भः ।
कुञ्चितं पादमुत्क्षिप्य पार्श्वेनाक्षिप्य पृष्ठतः ।
अन्याङ्घ्रेः स्वस्तिकं कृत्वा शरीरं भ्रामयेद्यदा ॥
तिर्यग्यद्दण्डपक्षाभ्यां यथा स्यात् स्वस्तिकच्युतिः ।
तिरिपभ्रमरीत्येषा तदा तज्ज्ञैर्निगद्यते ॥ ज्यायनः ।

(See Bharatakośa P. 251 and
Nṛttasamgraha P. 13 Line 308)

तिर्यङ्मुखा – देशीचारी--

स्थानके वर्धमानाख्ये स्थित्वा पादौ प्रसर्पतः ।
सव्यापसव्ययोस्तूर्णं यत्र तिर्यङ् मुखा तु सा ॥ वेमः ।

(See Bharatakośa P. 251 and
Nṣttasamgraha P. 4–7, Lines 83–161)

तिवटम् – देशीनृत्तम्--

नवर्जिततवर्गेण क्वचित्क्वचित् ।
निर्मितं बिन्दुना वर्ज्यमिति तादिग्रहोत्तमम् ॥
तालावृत्तानुगम्भीरैः तिवटं परिकीर्तितम् । वेदः ।

(See Bharatakośa P. 251–252 and
Nṛttasamgraha P. 19, P. 475)

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तुल्लम्—

सपादेनादितालेन धृत्या सव्यापसव्ययोः ।
स्वस्तिकीकृत्य जंघे चेद् भ्राम्येतां कर्तरीं जगुः ॥
राजतालेन तालेन नर्तनं सर्वदिङ्मुखम् ।
सौष्ठवाधिष्ठितं यत्र तत्तुल्लमभिधीयते ॥

(See Bharatakośa P. 847)

तुल्लम् – देशीनृत्तम् (उड्डुपाङ्गम्)––

हृदये शिखरद्वन्द्वं कुञ्चिते स्थानके ततः ।
चतुरश्रे स्थानके च पर्यायेण पताककौ ॥
अधः प्रसार्य वामोऽङ्घ्रिः स्थाप्यस्तेन सहैव तु ।
वामोऽलपद्मः पुरतः प्रसार्याधः पताककः ॥
हृदये वामशिखरं प्रसृतं च पताककम् ।
दक्षिणे तुल्लमुद्दिष्टं आदितालेन सूरिभिः ॥ वेदः ।

(See Bharatakośa P. 255 and
Nṛttasamgraha P. 9, Lines 218-221)

ध्रुवपदनृत्तम् – देशीनृत्तम्—

गीयमाने ध्रुवपदे गीते भावमनोहरे ।
नर्तनं तनुयात् पात्रं कान्ताहास्यादिदृष्टिजम् ॥
नानागतिलसद्भावमुखरागादिसंयुतम् ।
सुकुमाराङ्गविन्यासं दन्तोद्योतितहावकम् ॥
खण्डमानेन रचितं मध्ये मध्ये च कम्पनम् ।
यत्र नृत्यं भवेदेवं ध्रुपदाख्यं तदा भवेत् ॥
प्रायशो मध्यदेशीयभाषया यत्र धातवः ।
उद्ग्राहध्रुवकाभोगास्त्रय एते भवन्ति ते ॥
उद्ग्राहरहितं केचित् परे त्वाभोगवर्जितम् ।
उद्ग्राहाभोगरहितमन्वर्थमपरे जगुः ।
स्यादक्षिभ्रुविकारादिशृङ्गाराकृतिसूचके ॥ वेदः ।

(See Bharatakaśa P. 299 and
Nṛttasamgraha P. 15, Line 376)

नडनेरिः – देशीनृत्तम्—

द्रुतमानादादितालाद् भूयो भूयो विवर्तनम् ।
लोलितं भ्रमरं यत्र नडनेरिः स उच्यते ॥ दामोदरः ।
संहतस्थानके सूलूं गृहीत्वा शिखरं हृदि ।
कृत्वा तत्तत्सौष्ठवेन कुर्याच्च तलदर्शिनी ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पताकौ पार्श्वयोः पश्चाच्छनकैश्च प्रसारयेत् ।
पुनः शनैः पताकौ च तावानीय शिरो हृदि ॥
कृत्वा ततो दक्षवामपर्यायेण द्विवारकम् ।
ततः पताकः प्रसरः कुर्याच्च तदनन्तरम् ॥
चतुर्दिक्षु प्रसरणं पताकस्य ततः परम् ।
पर्यायेण पञ्चपदी सूलू ग्राह्या पुनस्ततः ॥
पर्यायेण भ्रमिद्वन्द्वात्मकस्तु कृतकालतः ।
वामदक्षिणयोः पश्चात् पार्श्वयोस्तिरिपं भवेत् ।
ततस्तु मलकं कृत्वा विधेयं तु तकारणम् ॥ वेदः ।

(See Bharatakaśa P. 306 and
Nṛttasamgraha P. 19, Line 490)

नत्रम् – देशीनृत्तम् (उडुपाङ्गम्)—

नन्द्यावर्तं स्थानकं स्यान्मराला चारिका तथा ।
ललितो भ्रमरो हस्तो नत्रं स्यात् समतालतः ॥ वेदः ।

(See Bharatakośa P. 306 and
Nṛttasamgraha P. 8, Lines 168–169)

नागबन्धः – नृत्तबन्धः—

योऽस्मिंस्तृतीयपङ्क्तेस्तु द्वितीयं स्थानमाश्रिता ।
नर्तकी तु द्वितीयस्याः प्रथमं स्थानमाश्रयेत् ॥
ततः प्रथमपङ्क्तेस्तु क्रमात् स्थानचतुष्टयम् ।
प्राप्य तुर्यं द्वितीयायाः तृतीयस्यास्तृतीयकम् ॥
क्रमाद् व्रजेदेवमन्या चरेद्विनिमयेन च ।
नागबन्धं समाचष्ट तं सङ्ग्रामधनञ्जयः ॥ वेमः ।

(See Bharatakośa P. 313 and
Nṛttasamgraha P. 9)

नामावली – देशीनृत्तम्—

समे स्थित्वा स्थाने यदि भवति सूलू सुललिता,
करौ स्वान्ते कृत्वा रुचिरशिखरौ योगसहितौ ।
ततः पार्श्वे सव्ये प्रसरति लताख्ये यदि भवेत्,
करौ व्यावृत्यासौ हृदि शिखरतामेति सपदि ॥

पुरः पार्श्वतो दक्षवामौ पताकौ,
यदा प्रसृतौ तद्यक्षवामेऽलपद्मौ ।
कृतौ हंसवक्त्रौ पुरस्तौ विधेयौ,
करौ चालपद्मौ हृदिस्थौ पुनस्तौ ॥

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भवेदादितालेन तत्कारपूर्वक्रमोयं सदा देवनामावलीनाम् ।
विनोदास्तु तासां सदा संप्रयुक्तश्चतुःपञ्चषट्खण्डकैः कोहलेन ॥
वेदः ।

(See Bharatakośa P. 327 and
Nṛttasamgraha P. 19, Lines 475-476)

नेरिः – देशीनृत्तम्—

आदितालानुगं यत्र विलम्बितलयान्वितम् ।
रेखामुद्राप्रमाणाद्यं नानाकरविभूषितम् ।
द्विचत्रगभिमुखं नृत्तं नेरिरित्यभिधीयते ॥ दामोदरः ।

(See Bharatakośa P. 341 and
Nṛttasamgraha P. 19, Lines 481-482)

पट्टिनृत्तम् - देशीनृत्तम्—

पदमेकं तालहीनं बद्धं त्रैलिङ्गभाषया ।
पूर्वस्वरोच्चार्यमाणं यदेकयतिसंयुतम् ।
पट्टिः सा कथिता तज्ज्ञैर्विदग्धानां मनोहरा ॥ दामोदरः ।

(See Bharatakośa P. 348 and
Nṛttasamgraha P. 17, Lines 426-430)

पद्मबन्धः – नृत्तबन्धः —

स्थाने स्थिता द्वितीयस्यास्तृतीयं पदमाश्रयेत् ।
तृतीयायाश्चतुर्थं च चतुर्थ्याश्च द्वितीयकम् ॥
स्थानक्रमाद् व्रजेदेवं द्वितीया पङ्क्तिरिष्यते ।
तृतीयपङ्क्तेराद्यस्था द्वितीयाया द्वितीयकम् ॥
आद्यायाश्च तृतीयं च चतुर्थं च क्रमाद् व्रजेत् ।
एवं तृतीयपङ्क्तिः स्यादथ तुर्याद्यमाश्रिता ॥
तद्द्वितीयं पदं प्राप्य तृतीयायास्तृतीयकम् ।
द्वितीयायाश्चतुर्थं च क्रमाद्गच्छेदियं पुनः ॥
चतुर्थी पङ्क्तिरेवं तु चतस्रः पात्रपङ्क्तयः ।
मिथश्चरन्ति मिलिता एवं विनिमयात् पृथक् ।
तं पद्मबन्धमाचष्ट रूपनारायणो नृपः ॥ वेमः ।

(See Bharatakośa P. 354 and
Nṛttasamgraha P. 9, Lines 196-199)

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पिल्लमूरू – देशीनृत्तम्—

गीततालानुगो यत्र नानावाद्यविनिर्मितः ।
अल्पो यः शब्द खण्डो हि थां-तो-धि-दिग-णान्तकः ॥ वेदः ।

(See Bharatakośa P. 370 and
Nṛttasamgraha P. 17, Line 425)

प्रबन्धनृत्तम्—

षडङ्गादिप्रमाणेन प्रबन्धाध्यायसंमताः ।
कृता वाग्गेयकारैस्तु तेषां खण्डानुसारतः ॥
स्वराणां पाटशब्दानां तेनकानां लयेन च ।
संगीतोक्तक्रमेणैव पदानां भावदर्शनम् ।
ये प्रबन्धाः पुरा प्रोक्ताः तेषां नर्तनमाचरेत् ॥ वेदः ।

(See Bharatakośa P. 390 and
Nṛttasamgraha P. 2, Line 4)

प्रसरम् – देशीनृत्तम् (उडुपाङ्गम्)—

चतुरश्रस्थानके च शिखरद्वितयं हृदि ।
आविद्धवक्रहस्ताभ्यां पार्ष्णिरेचितयान्वितम् ॥
मध्यसञ्चेन प्रसरमादितालाच्च यद्भवेत् ।
सव्यः पताकः प्रसृतः पार्श्वे वामः पुरो गतः ॥
पताकः स्याद्विपर्यासादङ्गानां प्रसरे भवेत् ।
मण्डलस्थानके पार्श्वे पताकौ प्रसृतौ यदि ॥
तत्तत्स्थाने कुञ्चितके शिखरद्वितयं हृदि ।
समसूच्या भुवं गत्वा सौष्ठवेन यदा भवेत् ॥
पुनः पश्चात्प्रचलनमाविद्धप्रसृतौ करौ ।
व्यावृत्य पुरतः पश्चात् परिवर्तनतो भवेत् ॥
संहृत्स्थानके स्थित्वा भ्रमरीमाचरेत्ततः ।
प्रान्ते च चतुरश्रं स्यात् प्रसरोडुपमुच्यते ॥ वेदः ।

(See Bharatakoṣa P. 396 and
Nṛttasamgraha P. 9, Lines 222–225)

बाह्यभ्रमरी – भ्रमरी—

दक्षिणेनाङ्घ्रिणा स्थित्वा वाममङ्घ्रिं तु कुञ्चयन् ।
वामावर्तं भवेद्यत्र सा बाह्यभ्रमरी मता ॥ वेदः ।
सव्येतरेण पादेन स्थित्वा सव्याङ्घ्रिकुञ्चनात् ।
सव्यावर्तं भ्रमेद्यत्र सा बाह्यभ्रमरी मता ॥ कुम्भः ।

(See Bharatakośa P. 419 and
Nṛttasamgraha P. 11, Line 254)

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भिन्नम् - देशीनृत्तम् (उडुपाङ्गम्)—

कुञ्चिते स्थानके स्थित्वा यदा नूपुरपादिका ।
वामोऽधोमुखमंसास्यः अलपद्मः प्रकम्पितः ॥
पादः प्रसारिताग्रस्थः त्रिपताकः शिरः स्थितः ।
दक्षिणे प्राग्गतिर्नीत्वा तथा वामे च चारिवत् ॥
नूपुराङ्घ्रिविपर्यासाद्भ्रमरी रचिता यदा ।
क्रीडातालेन विहितं तद्भिन्नमभिधीयते ॥ वेदः ।

(See Bharatakośa P. 438 and
Nṛttasamgraha P. 7, Lines 157–159)

मूरू - देशीनृत्ताङ्गम्—

हृदये वामशिखरं स्थाप्य सव्यपताककम् ।
दक्षपार्श्वे प्रसार्याथ दक्षिणावर्ततस्ततः ॥
भ्रमरीमाचरेत् पश्चादेकपादोपरि स्थितः ।
नम्रोभूत्वा त्रिपताकं पुरतश्च प्रसारयेत् ॥
हृदि वामं च शिखरं न्यस्य स्कन्धानतं शिरः ।
वलनद्वितयं कुर्यादन्ते स्याच्च तकारणम् ।
मूरूलक्षणमित्युक्तं सङ्गीतज्ञैः पुरातनैः ॥ वेदः ।

(See Bharatakośa P. 500 and
Nṛttasamgraha P. 19, Lines 497–498)

रथचक्रा - देशीचारी—

स्थाने तु चतुरस्राख्ये स्थित्वा श्लिष्टौ परस्परम् ।
पुरतः पृष्ठतो वापि चरणौ चेत् प्रसर्पतः ।
यत्रैषा रथचक्राख्या चारी तु परिकीर्तिता ॥ वेमः ।

(See Bharatakośa P. 524 and
Nṛttasamgraha P. 7, Line 142)

रायबङ्गालः - देशीनृत्तम् ।

सुलूं बध्वैकपादेन दक्षपादेन कुट्टनम् ।
तत उत्प्लुत्य चरणावूर्ध्वं च विरलीकृतौ ॥
अन्तराले भ्रामयित्वा निपतेद्धरणीतले ।
रायबङ्गालध्वाडोऽयं कथितः पूर्वसूरिभिः ॥ वेदः ।

(See Bharatakośa P. 550 and
Nṛttasamgraha P. 11, Lines 266–272)

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शब्दचाली(लिः) – देशीनृत्तम्—

प्राग्वत् कृत्वा स्थानहस्तौ मध्यसञ्चेन नर्तकः ।
यत्र स्थित्वैकपादेन शब्दवर्णानुगामिनीम् ॥
गतिं नयेद् द्वितीयेन दक्षिणाध्वनि शोभनम् ।
तद्वत्पादान्तरेणाथ क्रमेणैतद्द्वयोर्यदा ॥
पर्यायेण गतिं कुर्याद्वार्तिकादिषु पञ्चसु ।
मार्गेष्वसौ शब्दचाली पण्डितैश्च निरूपिता ॥

अथवा

मार्गतालक्रमेणैव रासतालेन नर्तनम् ।
शब्दचालिस्तथा प्रोक्ता लक्ष्यदृष्ट्या विचक्षणैः ॥ दामोदरः ।

(See Bharatakośa P. 656 and
Nṛttasamgraha P. 2, Line 17)

सङ्कीर्णनेरिः – देशीनृत्तम्—

स्थानैः संहतकादिषोडशमुखैश्चारीभिरासप्तभिः,
त्रिंशत्सप्तमितैर्युतैरमिलितैरन्यैस्त्रिभिर्हस्तकैः ।
दृग्भेदैः करणैर्वरैरथशिरोभेदाङ्गहारैः स्फुटा,
सङ्कीर्णा गदिता बुधैर्नटमुदे नेरिर्मनोहारिणी ॥ वेदः ।

(See Bharatakośa P. 691 and
Nṛttasamgraha P. 19, Line 487)

सालङ्गनेरिः – देशीनृत्तम्—

सालङ्गनेरिः स ज्ञेयो युतायुतकरैः कृतः । वेदः ।

(See Bharatkośa P. 723 and
Nṛttasamgraha P. 19, Line 484–85)

सूलू – देशीनृत्तम्—

एकः समस्थितः पृष्ठे द्विवितस्तिः पुरः पुरः ।
सूलूस्थानकमेतत् स्यादेवं चरणरक्षणा ॥
पुरतः परितो वामः पताकोऽन्यस्तु पार्श्वतः ।
दक्षिणाभ्रमणात् सूलूं द्वित्रिवारं चरेत्ततः ॥
इति ध्वाडनृत्ते सूडुलक्षणम् । देवेन्द्रः ।

(See Bharatakośa P. 737–38 and
Nṛttasamgraha P. 17, Line 436)

सूलूपम् – देशीनृत्तम्—

किन्नरीतालसंयुक्तं तेन शब्देन नर्तनम् ।
मृदङ्गादियुतं यत् स्यात् सूलूपं तन्निगद्यते ॥ दामोदरः ।

(See Bharatakośa P. 738 and
Nṛttasamgraha P. 17, Line 434)

***

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शुद्धिपत्रक

	Read as	Line	Page
मव्यमो	मध्यमो	§10·1268 (footnote)	1
१३, ४०	१४, 40	40	3
चायी	चार्या	80	4
ब्राह्म	बाह्य	47	7
कोप्पल	कोत्पल	50	7
सबालककर	सबालमकर	62	7
पक्षिसालुवः	पक्षिसुलवः	73	11
56	55	55	11
तदाडालु	तदाऽडालु	77	11
समुत्प्लुत्य	समुत्प् लुत्य	90	12
65	95	95	12
क्वचित्	क्वचित्	399	16
उरुपेष्वेपि	उरुपेष्वपि	16	23
Omit	* at the end	—	24

***

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रकाशित ग्रन्थ

१ प्रमाणमञ्जरी – तार्किकचूडामणि सर्वदेव। २ यन्त्रराजरचना – महाराजाधिराज जयसिंहदेव कारिता। ३ कान्हडदे प्रबन्ध – महाकवि पद्मनाभ। ४ क्यामखांरासा – नवाब अलफखां (कविवर जान)। ५ लावारासा – चारण कविया गोपालदान। ६ महर्षिकुलवैभवम् – विद्यावाचस्पति स्व० श्री मधुसूदनजी ओझा। ७ वृत्तिदीपिका – मौनि कृष्णभट्ट। ८ राजविनोद काव्य – कवि उदयराज। ९ तर्कसंग्रहफक्किका – क्षमाकल्याणगणी। १० वृत्तसंग्रह – अज्ञातकर्तृक।

प्रेस में

१ त्रिपुराभारतीलघुस्तव – सिद्धसारस्वत लघुपण्डित। २ बालशिक्षा व्याकरण – ठक्कुर संग्रामसिंह। ३ करुणामृतप्रपा – महाकवि ठक्कुर सोमेश्वरदेव। ४ पदार्थरत्नमञ्जूषा – पं. कृष्णमिश्र। ५ शकुनप्रदीप – पं. लावण्यशर्मा। ६ उक्तिरत्नाकर – पं. साधुसुन्दर गणी। ७ प्राकृतानन्द – पं. रघुनाथ कवि। ८ ईश्वरविलासकाव्य – पं. कृष्णभट्ट। ९ चक्रपाणिविजयकाव्य – पं. लक्ष्मीधर भट्ट। १० काव्यप्रकाश – भट्ट सोमेश्वर। ११ कारकसंबन्धोद्योत – पं. रभसनन्दी। १२ शृंगारहारावलि – हर्षकवि। १३ कृष्णगीतिकाव्यानि – कवि सोमनाथ। १४ नृत्यरत्न कोश – महाराजाधिराज कुंभकर्णदेव। १५ नन्दोपाख्यान – अज्ञातकर्तृक। १६ चान्द्रव्याकरण – चन्द्रगोमी। १७ शब्दरत्नप्रदीप – अज्ञातकर्तृक। १८ रत्नकोश – अज्ञातकर्तृक। १९ कविकौस्तुभ – पं. रघुनाथ मनोहर। २० एकाक्षरकोशसंग्रह – विविधकविकर्तृक। २१ शतकत्रयम् – भर्तृहरि, धनसारकृत व्याख्यायुक्त। २२ वसन्तविलास – अज्ञातकर्तृक। २३ दुर्गापुष्पाञ्जलि – म. म. पं. दुर्गाप्रसादजी द्विवेदी। २४ दशकण्ठवधम् – म. म. पं. दुर्गाप्रसादजी द्विवेदी। २५ गोरा बादल पदमिणी चऊपइ – कवि हेमरतन। २६ बांकीदासरी ख्यात – महाकवि बांकीदास। २७ मुंहता नैणसीरी ख्यात – मुंहता नेणसी इत्यादि।

प्राप्तिस्थान – सञ्चालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust